कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2026-28 RNI No.-CHHHIN/2002/10910, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर

ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 | रायपुर, प्रकाशन - सोमवार | 9 फरवरी 2026 | वर्ष-24 | अंक- 23 | मूल्य रु. 12/- | कुल पृष्ठ - 12 | www.krishakjagat.org | पृष्ठ - 1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

कृषि पत्रकारिता के लिए भाकृअनुप ICAR चौधरी चरणसिंह अवार्ड से पुरस्कृत

अंदर पढ़िये...

5

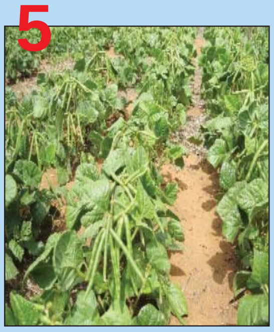

जायद में लगाएं मूंग

6

भिण्डी लगाकर पाएं अधिक लाभ

7

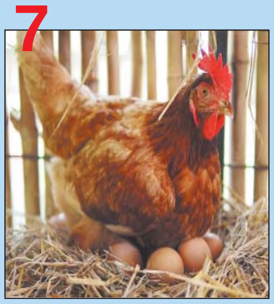

अण्डा उत्पादन को कम करने वाले पोषण से जुड़े रोग

8

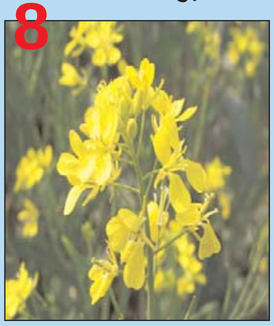

समस्या-समाधान

आदिवासियों की संस्कृति में बसती है छत्तीसगढ़ की आत्मा - श्रीमती मुर्मू

बस्तर पंडुम के संभाग स्तरीय शुभारंभ कार्यक्रम में बस्तर पहुंची राष्ट्रपति

रायपुर। राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने संभाग स्तरीय बस्तर पंडुम-2026 का शुभारंभ किया। राष्ट्रपति ने इस अवसर पर कहा कि आदिवासियों की संस्कृति में छत्तीसगढ़ की आत्मा बसती है। उन्होंने बस्तर की आराध्य देवी माँ दंतेश्वरी के जयघोष के साथ अपने उद्बोधन की शुरूआत की। राष्ट्रपति ने कहा कि देश में छत्तीसगढ़ ऐसा राज्य है, जहाँ सरकार अपनी संस्कृति, जनजातीय परंपराओं और प्राचीन विरासतों को संरक्षित करने के लिए बस्तर पंडुम जैसे आयोजन कर रही है। यह आयोजन आदिवासियों की गौरवशाली संस्कृति का जीवंत प्रतिबिंब है। जगदलपुर के ऐतिहासिक लालबाग मैदान में आयोजित इस शुभारंभ समारोह में बड़ी संख्या में आदिवासी कलाकार और विशाल जनसमूह मौजूद रहा ।

सभी को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि प्रदेश की विष्णुदेव सरकार छत्तीसगढ़ के आदिवासियों के लिए समर्पित भाव से कार्य कर रही है। विभिन्न योजनाओं के माध्यम से जनजातीय उत्थान के लिए निरंतर बेहतर प्रयास किए जा रहे हैं। पीएम जनमन, प्रधानमंत्री जनजातीय गौरव उत्कर्ष अभियान तथा नियद नेल्ला नार जैसी योजनाओं के जरिए जनजातीय समाज को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा रहा है।

राष्ट्रपति ने बस्तर क्षेत्र में आदिवासी बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष जोर देते हुए कहा कि जनजातीय बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने के लिए शासन के साथ-साथ समाज और उनके माता-पिता को भी आगे आना होगा।

राज्यपाल श्री रमेन डेका-

राज्यपाल श्री रमेन डेका शुभारंभ समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि बस्तर पंडुम कोई साधारण मेला नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की जनजातीय लोक संस्कृति का उत्सव है। यहाँ के लोकनृत्य, लोकगीत, पारंपरिक पहनावा, आभूषण, ढोल-नगाड़े और पारंपरिक व्यंजन मिलकर बस्तर की सुंदर तस्वीर दुनिया के सामने प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कहा कि गौर नृत्य, परघौनी नृत्य तथा धुरवा, मुरिया, लेजा जैसे नृत्य बस्तर की सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक हैं। इस प्रकार के आयोजन हमारी आदिवासी संस्कृति और परंपराओं को नई पीढ़ी से जोड़ने का सशक्त माध्यम हैं।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय-

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने माँ दंतेश्वरी को नमन करते हुए कहा कि राष्टपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु का बस्तर पंडुम में आना केवल औपचारिक उपस्थिति नहीं, बल्कि बस्तर के लिए आशीर्वाद, जनजातीय समाज के लिए सम्मान और माताओं-बहनों के लिए अपनत्व है। उन्होंने कहा कि बस्तर पंडुम केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि जनजातीय समाज के जीवन, आस्था, बोली-भाषा, नृत्य-गीत, वेशभूषा, खान-पान और जीवन-दर्शन का जीवंत प्रतिबिंब है। मुख्यमंत्री ने बताया कि बस्तर पंडुम के लिए इस वर्ष 12 विधाओं में 54 हजार से अधिक कलाकारों ने पंजीयन कराया है।

कृषि और ग्रामीण विकास का बजट 4.35 लाख करोड़ से अधिक : श्री शिवराज

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने केंद्रीय बजट 2026-27 को विकसित भारत और आत्मनिर्भर भारत की मज़बूत नींव रखने वाला ऐतिहासिक और अभूतपूर्व बजट बताया है। श्री चौहान ने कहा, 'यह बजट विकसित भारत के सपने को साकार करने का महाकाव्य है। यह समाज की समृद्धि और संकल्पों की सिद्धि का बजट है - यह डेवलप्ड इंडिया का डायनामिक बजट है। किसान, युवा, महिला और गरीब - देश की इन चारों जातियों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का यह बजट एक नया अध्याय लिख रहा है।'

कृषि बजट में उल्लेखनीय वृद्धि

केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कृषि विभाग का बजट बढ़ाकर इस वर्ष 1,32,561 करोड़ रुपये कर दिया गया है। उन्होंने बताया कि कृषि शिक्षा और अनुसंधान, विशेषकर आईसीएआर सहित, के लिए 9,967 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जिससे शोध और नवाचार को बल मिलेगा। किसानों के लिए उर्वरक सब्सिडी पर उन्होंने कहा कि सस्ता खाद और उर्वरक उपलब्ध कराने के लिए 1,70,944 करोड़ रुपये की सब्सिडी का प्रावधान है, ताकि उत्पादन की लागत कम हो और किसान को राहत मिले।

ग्रामीण विकास बजट में 21% की वृद्धि

श्री चौहान ने बताया कि ग्रामीण विकास विभाग के बजट में इस वर्ष 21 प्रतिशत की वृद्धि की गई है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास और कृषि विभाग को जोड़कर देखें तो ग्रामीण विकास और कृषि मंत्रालय का सम्मिलित बजट अब 4 लाख 35 हज़ार 779 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है, जो गांव और किसान के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि ग्रामीण विकास के कुल बजट में अकेले 'विकसित भारत जी राम जी' योजना के लिए राज्यों के अंशदान सहित लगभग 1.51 लाख करोड़ रुपये से अधिक का प्रावधान किया गया है।

श्री सिंह ने कहा कि लखपति दीदी योजना की सफलता को आगे बढ़ाते हुए बजट में सेल्फ हेल्प एंटरप्रेन्योर 'SHE मार्ट' की व्यवस्था की गई है।

हर ज़िले में बहनों के उत्पादों को बेचने के लिए एक प्लेटफॉर्म के रूप में कम्युनिटी ओन्ड रिटेल आउटलेट स्थापित होंगे, जहाँ स्वयं सहायता समूहों और ग्रामीण बहनों द्वारा तैयार उत्पादों को नया बाज़ार मिलेगा।

मेडिसिनल प्लांट्स से किसानों को सीधा लाभ

श्री चौहान ने कहा कि नेशनल फाइबर स्कीम के तहत सिल्क, वूल और जूट जैसे फाइबर पर फोकस किया गया है, जिससे इनसे जुड़े किसानों को सीधा लाभ मिलेगा।उन्होंने यह भी कहा कि आयुष मंत्रालय में मेडिसिनल प्लांट्स के सर्टिफिकेशन और एक्सपोर्ट से संबंधित प्रावधानों का फायदा औषधीय पौधे उगाने वाले किसानों की आमदनी बढ़ाने में मदद करेगा। उन्होंने कहा कि परंपरागत फसलों के साथ साथ नारियल, कोको, काजू और चंदन की लकड़ी जैसी उच्च मूल्य फसलों के लिए भी स्पष्ट प्रावधान किए गए हैं।

खेती की अधिक जानकारी के लिए देखें
www.krishakjagat.org

अमलाहा (ICARDA) से केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का बड़ा संदेश

देश में दलहन उत्पादकता बढ़ाने हुआ क्रांति का आगाज

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सीहोर में इकॉर्डा (शुष्क क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र) अंतर्गत खाद्य दलहन अनुसंधान प्लेटफार्म के प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ किया।

(विशेष प्रतिनिधि)

अमलाहा (सीहोर, म.प्र./कृषक जगत)। मध्य प्रदेश के सीहोर ज़िले के अमलाहा स्थित खाद्य दलहन अनुसंधान केंद्र (FLRP) से आज देश की दलहन नीति और किसान-केंद्रित कृषि विमर्श का नया अध्याय जुड़ा और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की अध्यक्षता में देशव्यापी दलहन क्रांति का आगाज़ हुआ। यहाँ आयोजित राष्ट्रीय दलहन परामर्श एवं रणनीति बैठक में एक ही मंच पर केंद्रीय कृषि मंत्री श्री चौहान के साथ ही केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री भागीरथ चौधरी-श्री रामनाथ ठाकुर तथा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, राजस्व मंत्री म.प्र. श्री करण सिंह वर्मा, कृषि मंत्री म.प्र. श्री एदल सिंह कंषाना, श्रीमती कृष्णा गौर राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार म.प्र. एवं कई राज्यों के कृषि मंत्री, शीर्ष वैज्ञानिक, ICAR-ICARDA के प्रतिनिधि, प्रगतिशील किसान, एफपीओ, बीज और दाल मिल प्रतिनिधि जुटे और संदेश साफ़ था: दलहन में आत्मनिर्भर भारत का रोडमैप अब खेतों के बीच से तय होगा, दिल्ली के फाइलों के कमरों से नहीं।

‘खेती खेत में समझी जाती है, दिल्ली में नहीं’

कृषि मंत्री ने कहा कि खेत से दूर बैठकर खेती को समझा नहीं जा सकता। इसी सोच के साथ पहली बार कृषि मंत्रालय की महत्वपूर्ण बैठक दिल्ली से बाहर गाँव में आयोजित की गई, ताकि नीति और ज़मीन के बीच की दूरी खत्म हो।

यह पहल दलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता, किसानों की आय वृद्धि और खेती को वैज्ञानिक आधार देने की दिशा में एक बड़ा कदम मानी जा रही है।

दलहन उत्पादकता बढ़ाना सरकार का लक्ष्य

मसूर, चना, उड़द, बटरा और मूंग जैसी दलहनों की पैदावार बढ़ाने पर विशेष फोकस रहेगा। किसानों को ऐसे बीज उपलब्ध कराए जाएंगे जो अधिक उत्पादन देने के साथ रोगमुक्त भी हों।

ICAR-ICARDA की आधुनिक प्रयोगशालाएँ गढ़ेंगी खेती का भविष्य

इकार्डा में स्थापित होने वाली प्लांट जीनोमिक्स, टिश्यू कल्चर, ब्रीडिंग और पैथोलॉजी जैसी अत्याधुनिक लैब में शोध कर बेहतर बीज तैयार किए जाएंगे। नियंत्रित तापमान में बीज उत्पादन कर साल में तीन बार उत्पादन संभव बनाया जाएगा। प्रयोगशालाओं में कृत्रिम वातावरण बनाकर तेज़ी से बेहतर बीज विकसित होंगे। फंगस, वायरस और मिट्टी जनित रोगों पर शोध कर रोगमुक्त फसलें तैयार की जाएंगी।

किसानों के बीच होगा बीज विमोचन

कृषि मंत्री ने घोषणा की कि अब कोई भी बीज दिल्ली में रिलीज नहीं होगा। अलग-अलग राज्यों में, किसानों के बीच जाकर नए बीजों का विमोचन किया जाएगा।

क्लस्टर मॉडल से संगठित खेती को बढ़ावा

क्लस्टर में जुड़ने वाले किसानों को बीज किट दी जाएगी। आदर्श खेती के लिए प्रति हेक्टेयर रु. 10,000 की सहायता प्रदान की जाएगी।

बीज से बाज़ार तक सरकार की सीधी पकड़

सरकार का फोकस केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रहेगा। किसानों को उनके उत्पादन का उचित मूल्य मिले, इसके लिए संपूर्ण व्यवस्था बनाई जाएगी।

क्लस्टर स्तर पर दाल मिल : रु. 25 लाख तक की सब्सिडी

दाल उत्पादन वाले क्षेत्रों में ही दाल मिल स्थापित करने को प्रोत्साहन मिलेगा। दाल मिल लगाने पर भारत सरकार रु. 25 लाख तक की सब्सिडी देगी।

देशभर में 1,000 दाल मिलें, म.प्र. में 55

इस मिशन के तहत देश में 1,000 दाल मिलें स्थापित की जाएँगी, जिनमें से 55 दाल मिलें मध्यप्रदेश के विभिन्न क्लस्टरों में खोली जाएँगी, ताकि उत्पादन, प्रोसेसिंग और बिक्री एक ही क्षेत्र में हो सके।

किसानों को बनाएंगे सशक्त

म. प्र. के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अन्य राज्यों से आए कृषि मंत्रियों से भी आग्रह किया कि भारत की कृषि उपलब्धियों को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि केंद्र और राज्य सरकार मिलकर दलहन उत्पादन बढ़ाने तथा किसानों को सशक्त बनाने की दिशा में ठोस कदम है। ‘खाद्य दलहन अनुसंधान केंद्र’ में ICARDA के नवनिर्मित प्रशासनिक भवन, प्रशिक्षण केंद्र तथा अत्याधुनिक प्लांट टिशुकल्चर प्रयोगशाला का लोकार्पण किया। ‘राष्ट्रीय दलहन आत्मनिर्भरता मिशन’ अंतर्गत आयोजित ‘राष्ट्र स्तरीय परामर्श एवं रणनीति सम्मेलन’ के अवसर पर ‘पल्सेस मिशन पोर्टल’ का शुभारंभ भी किया गया। ‘राष्ट्रीय दलहन मिशन’ के अंतर्गत मध्यप्रदेश को रू. 354 करोड़ का बजट मिला है। दलहन उत्पादन में मध्यप्रदेश, देश में पहले स्थान पर है। इस मिशन का सर्वाधिक लाभ प्रदेश के किसानों को मिलेगा।

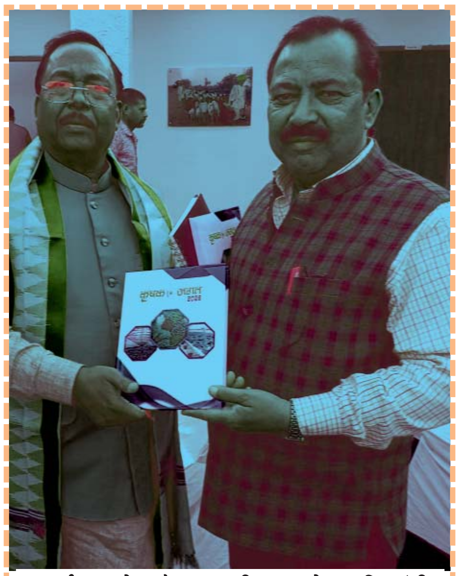

कार्यक्रम के दौरान छत्तीसगढ़ के कृषि मंत्री श्री राम विचार नेताम को कृषक जगत डायरी 2026 भेंट करते हुए अतुल सक्सेना

उपस्थित रहे अन्य राज्यों के कृषि मंत्री

श्री आशीष नंदकिशोर जायसवाल कृषि मंत्री महाराष्ट्र, श्री रामकृष्ण यादव कृषि मंत्री बिहार, श्री श्याम सिंह राणा कृषि मंत्री हरियाणा, श्री रामविचार नेताम कृषि मंत्री छत्तीसगढ़, श्री कनकवर्धन सिंह देव उपमुख्यमंत्री एवं कृषि मंत्री उड़ीसा, श्री सूर्यप्रताप शाही कृषिमंत्री उ.प्र., श्री किरोड़ीलाल मीणा कृषि मंत्री राजस्थान, श्री रमेशभाई भूराभाई कटारा कृषिमंत्री गुजरात।

अधिकारीगण

श्री संजय कुमार अग्रवाल संयुक्त सचिव कृषि भारत सरकार, डॉ. मांगीलाल जाट डीजी आईसीएआर, श्री शिवकुमार अग्रवाल निदेशक इकार्डा, श्री अली आबूसाबा महानिदेशक इकार्डा।

दलहन पर राष्ट्र स्तरीय परामर्श एवं रणनीति सम्मेलन-ईकार्डा सीहोर

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने सीहोर के इकॉर्डा (शुष्क क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र) में आयोजित राष्ट्रीय दलहन आत्मनिर्भरता मिशन अंतर्गत राष्ट्रीय - स्तरीय परामर्श कार्यक्रम में पुस्तकों का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को सीहोर के इकॉर्डा (शुष्क क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र) में आयोजित राष्ट्रीय दलहन आत्मनिर्भरता मिशन अंतर्गत राष्ट्र स्तरीय परामर्श कार्यक्रम में श्री संजय अग्रवाल संयुक्त सचिव कृषि मंत्रालय की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

विकसित भारत - जीरामजी योजना से ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ेगा रोजगार और आजीविका का दायरा: श्री साय

40 आईटी कंपनियों से हुआ एमओयू

चिट फंड कंपनी के 4601 निवेशकों को वापस दिलाए गए 7.38 करोड़ रूपए

रायपुर। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने दुर्ग में आयोजित छत्तीसगढ़ राज्य ग्रामीण एवं अन्य पिछड़ा वर्ग विकास प्राधिकरण की बैठक के दौरान विकसित भारत - गारंटी फॉर रोजगार एवं आजीविका मिशन (ग्रामीण) (जीरामजी) को ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार एवं आजीविका के लिए क्रांतिकारी योजना बताया। उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा शुरू की गई यह योजना एक नई ग्रामीण रोजगार योजना है, जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और आजीविका को बढ़ावा देना है। यह योजना मनरेगा की जगह पर शुरू की गई है और इसमें कई नए प्रावधान किए गए हैं।

इस योजना के तहत ग्रामीण परिवारों को साल में 125 दिनों का रोजगार दिया जाएगा, जो पूर्व में केवल 100 दिवस का था। काम नहीं मिलने पर बेरोजगारी भत्ता, एक सप्ताह में मजदूरी का भुगतान किया जाएगा। अगर मजदूरी का भुगतान 15 दिनों के भीतर नहीं किया जाता है, तो 0.05 प्रतिशत की दर से ब्याज दिया जाएगा। इसके तहत ग्राम पंचायतों को योजना बनाने और कार्यान्वयन की जिम्मेदारी दी गई है।

भारत सरकार द्वारा इस योजना के लिए वर्ष 2026-27 में 95,692.31 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान रखा गया है। उल्लेखनीय है कि पूर्ववर्ती बजट 88,000 करोड़ रुपये (मनरेगा के लिए) निर्धारित था। मुख्यमंत्री श्री साय ने राज्य में इस योजना के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर देते हुए कहा है कि इससे व्यापक पैमाने पर जरूरतमंदों को उनके गांवों में रोजगार एवं आजीविका के अवसर उपलब्ध होंगे। इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय की मौजूदगी में आज 40 आईटी कंपनियों और आईटी के निदेशकों के बीच एमओयू हुआ। मुख्यमंत्री श्री साय ने यस चिट फंड कंपनी के निवेशकों को उनके द्वारा निवेश किए गए राशि का चेक प्रदान किया। इसके अंतर्गत कुल 4601 निवेशकों को 7 करोड़ 38 लाख 24 हजार 100 की राशि का चेक प्रदाय किया गया।

भारत अमेरिका अंतरिम व्यापार समझौता छत्तीसगढ़ के लिए नए आर्थिक अवसरों का द्वार खोलेगा

प्रधानमंत्री के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत और अमेरिका के बीच अंतरिम व्यापार समझौता भारत की वैश्विक आर्थिक साख और सामर्थ्य को और अधिक मजबूत करने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने कहा कि इस समझौते से छत्तीसगढ़ के सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों को अमेरिकी बाजार तक नई पहुँच मिलेगी। विशेष रूप से राज्य के वन-आधारित उत्पाद, हथकरघा एवं हस्तशिल्प, वस्त्र तथा कृषि आधारित उत्पादों के लिए निर्यात, निवेश और रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे, जिससे प्रदेश के युवाओं को व्यापक लाभ मिलेगा।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि इस व्यापारिक ढांचे में किसानों के हितों और ग्रामीण आजीविका की पूरी तरह सुरक्षा सुनिश्चित की गई है। साथ ही यह पहल महिला सशक्तिकरण को गति देने, स्थानीय उत्पादों की वैश्विक ब्रांडिंग को मजबूती प्रदान करने और मेक इन इंडिया की भावना को और सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि भारतङ्गअमेरिका अंतरिम व्यापार समझौता छत्तीसगढ़ के लिए नए आर्थिक अवसरों का द्वार खोलेगा। उन्होंने कहा कि विकसित भारत ञ्च2047 के लक्ष्य की दिशा में छत्तीसगढ़ एक सशक्त और सक्रिय भागीदार के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है और यह समझौता राज्य के समावेशी एवं सतत आर्थिक विकास को नई गति देगा।

डॉ जाट ने कृषि विश्वविद्यालय की अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों की सराहना की

रायपुर। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के महानिदेशक डॉ. एम. एल. जाट ने आज यहां इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर के उत्पाद विक्रय काउंटर का दौरा कर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न कृषि उत्पादों, तकनीकों एवं मूल्य संवर्धित वस्तुओं का अवलोकन किया। डॉ जाट ने कृषि विश्वविद्यालय की इस अभिनव पहल की सराहना की. इस अवसर पर उन्होंने वैज्ञानिकों, कृषि उद्यमियों तथा आईजीकेवी से संबद्ध कृषि विज्ञान केंद्रों (केवीके) एवं एफपीओ प्रतिनिधियों से संवाद किया। इस विक्रय केंद्र में इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित कृषि विज्ञान केंद्रों, कृषक उत्पाद संगठनों तथा महिला स्व सहायता समूहों द्वारा उत्पादित कृषि उत्पादों का विक्रय किया जा रहा है।

भ्रमण के दौरान डॉ. जाट के साथ प्रमुख रूप से डॉ. डी. के. यादव, उप महानिदेशक (फसल विज्ञान), आईसीएआर; डॉ. राजवीर सिंह, उप महानिदेशक (विस्तार), आईसीएआर; डॉ. गिरीश चंदेल, कुलपति, आईजीकेवी; डॉ. पी. के. रॉय, निदेशक, एनआईबीएसएम, रायपुर; डॉ. एस. आर. के. सिंह, निदेशक, अटारी जोन-ढ्ढ्ढ, जबलपुर तथा डॉ. एस. एस. टुटेजा, निदेशक, विस्तार सेवाएं, आईजीकेवी, रायपुर उपस्थित थे।

महानिदेशक ने आईजीकेवी की अनुसंधान, विस्तार एवं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण गतिविधियों की समीक्षा की तथा विभिन्न महाविद्यालयों, केवीके एवं केवीके-समर्थित एफपीओ द्वारा तैयार उत्पादों की गुणवत्ता की सराहना की। उन्होंने बाजारोन्मुख कृषि, मूल्य संवर्धन, ब्रांडिंग और व्यावसायीकरण पर विशेष बल देते हुए कहा कि ऐसे प्रयास किसानों की आय वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जाज्वल्यदेव लोक महोत्सव एवं एग्रीटेक कृषि मेला 2026 की तैयारियां तेज

कलेक्टर ने किया कार्यक्रम स्थल का निरीक्षण

रायपुर। जिले में 11, 12 एवं 13 फरवरी 2026 को आयोजित होने वाले जाज्वल्यदेव लोक महोत्सव एवं एग्रीटेक कृषि मेला 2026 की तैयारियां तेज़ी से चल रही हैं। कलेक्टर श्री जन्मेजय महोबे ने आज शासकीय हाई स्कूल मैदान जांजगीर का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने ऐतिहासिक विष्णु मंदिर परिसर का अवलोकन करते हुए मंदिर परिसर में आकर्षक लाइटिंग एवं साज-सज्जा सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने निरीक्षण के दौरान महोत्सव स्थल में विभिन्न विभागों एवं निजी संस्थाओं द्वारा लगाए जाने वाले स्टॉल किसानों की आवश्यकता एवं हित को ध्यान में रखते हुए लगाए जाएं। उन्होंने कृषि आधारित योजनाओं, आधुनिक तकनीकों, बीज, उर्वरक, जैविक खेती, पशुपालन एवं उद्यानिकी से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराने कहा। साथ ही किसानों को नई कृषि तकनीक, आधुनिक उपकरण, ड्रोन तकनीक सिंचाई के नवाचार एवं उन्नत बीजों की जानकारी उपलब्ध कराई जाए। कलेक्टर ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान वनमंडल अधिकारी श्री हिमांशु डोंगरे, जिला पंचायत सीईओ श्री गोकुल रावटे, अपर कलेक्टर श्री ज्ञानेन्द्र सिंह ठाकुर, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री उमेश कश्यप सहित संबंधित अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा एल.आई.जी.-5, सेक्टर -2 शंकर नगर, रायपुर 492001 (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं कृषक जगत, 14 इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : अतुल सक्सेना, रायपुर : प्रेम प्रकाश सुल्लेरे, फोन : 0771-2420449, मो. : 9826255862, इस अंक का मूल्य रु. 12/-, वार्षिक शुल्क रु. 600/- RNI No.-CHHHIN/2002/10910, E-mail-info@krishakjagat.org

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

दर्शन का उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना नहीं, उसे बदलना है।
- डॉ. राधाकृष्णन

रबी के बाद जायद की तैयारी

रबी की मुख्य फसल गेहूं की कटाई के साथ-साथ एक लम्बा - चौड़ा रकबा खाली हो जायेगा। कुछ दशक पहले कटाई उपरांत खेत खाली पड़े रहते थे। ग्रीष्मकाल में जुताई करके खरीफ बुआई की अवधि में जमीन को मानो आराम दिया जाता था परंतु हमारी बढ़ती जनसंख्या, घटता रकबा और भोजन की मांग की पूर्ति हेतु हमें कुछ सीमित रकबा जायद के लिये तैयार करना होगा। एक तरह से कृषक जो जायद लगाना चाहते हैं के लिये अतिरिक्त कार्य, एक तरफ खलिहानों में रखे अनाज की गहाई, उड़ावनी, भंडारण का कार्य तो दूसरे तरफ खेतों में जुताई का कार्य, तो तीसरा कार्य इस जायद की मूंग/उड़द की बुआई का कार्य परंतु इन सभी कार्यों को सफलता से निपटाना किसी संगम नहाने से कम महत्व का कार्य नहीं मानना चाहिये क्योंकि सभी कार्य वर्तमान की बदलती परिस्थितियों की चुनौतियों को सफलता से सामना करने के लिये शक्ति, ज्ञान और संसाधन उपलब्ध कराते हैं। काम की अधिकता से कभी भी घबराना नहीं चाहिये क्योंकि विश्व में केवल कृषि उत्पादन ही एक ऐसा कार्य है जिसमें रुकने के लिये कोई स्थान नहीं थम सकते हैं, रुक नहीं सकते फिर हमेशा से उक्त सभी कार्यक्रम करते भी आये हैं जरूरत तो केवल इतनी ही है कि विभिन्न कार्यों की प्राथमिकता को पहचाना जाये। खेत काटने के बाद खलिहान में फसल फैलाकर सुखाने के बीच के समय का उपयोग जायद के लिये बोने वाले रकबे में पलेवा देकर छोड़ा जा सकता है। गरमी है तापमान के कारण दो-तीन दिन में बतर आ जायेगी। गहाई का कार्य करते-करते जायद के रकबे की बुआई निपटाई जा सकती है क्योंकि विलम्ब करने से जायद की फसल के पकने में देरी होगी और

जून के द्वितीय सप्ताह तक उसकी कटाई, गहाई, विपणन, भंडारण के कार्य भी निपटाने होंगे। जायद की फसलों की बुआई के बाद उसके रखरखाव में केवल सिंचाई आवश्यक होती है इस बीच अनाज को अच्छी तरह सुखाकर भंडारण भी किया जा सकता है। किसी भी कीमत पर जायद की बुआई उपरांत बचे रकबे में गेहूं की नरवाई जलाने का प्रयास नहीं किया जाये बल्कि खेत की गहरी जुताई करके खेत को खुला छोड़ दिया जाये। गहरी जुताई से अनेकों लाभ हैं भूमि में छुपी व्याधियों के अवशेष भीषण गर्मी में तपकर नष्ट हो जाते हैं भूमि के अंदर छुपे विभिन्न जीवाणुओं को प्रकाश, हवा सुलभ हो जाती है जिससे उनके पलने-पुसने के लिये उपयुक्त वातावरण बन सके और वर्षा काल में गिरते जल का संग्रहण कम से कम 9-10 इंच तक भूमि में गहराई तक हो सके। कहना ना होगा परंतु यह यर्थात है कि भूमि के भीतर जितनी अधिक से अधिक गहराई तक नमी का संरक्षण हो सकेगा उतना ही अधिक लाभ आने वाली फसल के विकास के लिये हो सकेगा। नरवाई जलाने की बात तो हो-हल्ले में अंजाम को बिना सोचे-समझे करने वाली बात होती है, सस्ता, सुन्दर परंतु कोई नहीं जानता कि कितना खतरनाक होता है खेत में माचिस की काड़ी लगाना, अनियंत्रित लपटों की चपेट में गांव तक आ सकते हैं और जान-माल की हानि की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा भूमिगत मित्र जीवाणुओं का खात्मा तो ध्यान रहे नरवाई में पानी देकर नरम करें फिर गहरी जुताई करके उसे खेतों में मोड़ दें ताकि कालान्तर में अच्छी खाद बनकर खेतों की उर्वराशक्ति में इजाफा किया जा सके। नरवाई की समस्या कम्बाईन से फसल काटने के उपरांत ही आती है। कटाई के तुरंत बाद रोटावेटर का उपयोग करके खेत बनाने से भूमि की जलधारण क्षमता बढ़ जाती है। रोटावेटर से खेत की तैयारी की लागत में 20-25 प्रतिशत तक की बचत होती है। कटाई उपरांत प्रबंध का अपना अलग महत्व होता है जिसे गंभीरता से, वरीयता से, प्राथमिकता निर्धारित करके ही किया जा सकता है इसे एक संगम में नहाने जैसा पवित्र कार्य ही मान कर किया जाये तो अच्छे परिणाम मिल सकेंगे।

आम बजट 2026 : ग्रामीण समृद्धि की रीढ़ बनेगा पशुधन

● प्रमोद भार्गव

ग्राम और ग्रामीण की समृद्धि की रीढ़ अब केवल खेती-किसानी तक सीमित नहीं रह गई है, इस आम बजट में सरकार ने पशुधन से पशुपालकों और दुग्धउत्पादकों की आय बढ़ाने के ठोस उपाय कर दिए हैं। इससे रोजगार बढ़ने के साथ दैनिक और मासिक आमदनी में स्थिरता आएगी। खेती पर बढ़ते संकट कम होंगे। पशुधन, मुर्गी व मत्स्य पालन ग्रामीणों की आजीविका के भरोसे के सहारा बनेंगे। यह पशुधन स्वस्थ बना रहे, इस लक्ष्यपूर्ति के लिए 20 हजार से अधिक पशु चिकित्सकों की उपलब्धता भी तय की गई है ताकि गांव में ही त्वरित इलाज की सुविधा मिले। फिलहाल देश में पशु-चिकित्सकों की बहुत कमी है, इस कारण उत्पादन प्रभावित हो रहा है। इस कमी को दूर करने के लिए डेढ़ लाख पशु देखभाल प्रशिक्षित सेवकों की अतिरिक्त तैनाती की जाएगी। इस उपाय से दुधारू पशुओं की असमय मृत्यु में कमी आएगी। यदि पालतू पशुओं को आरक्षित वनों में चरने की छूट दे दी जाती है तो सड़क दुर्घटनाओं में पशुओं के मरने में तो कमी आएगी ही,पौष्टिक चारा मिलने से दूध भी पौष्टिक होगा।

पशुधन की महिमा इस तथ्य से जानी जा सकती है कि खेती से होने वाली कुल आय में करीब 16 प्रतिशत की भागीदारी पशुपालन और उनसे उत्पादित आहार से है। इस आय में लगातार पिछले ग्यारह साल से 12.77 प्रतिशत की वार्षिक दर से वृद्धि हो रही है। यानी खेती जहां लघु व मध्यम किसानों के लिए घाटे का सौदा बनी हुई है, वहीं पशुपालन ग्रामीणों को भरोसे की आय का साधन बन गया है।

भारत दूध उत्पादन में दुनिया में पहले सोपान पर है। विश्व के कुल दूध उत्पादन में भारत 25 प्रतिशत का योगदान दे रहा है। बीते 10 साल में देश में दूध का उत्पादन लगभग 57 प्रतिशत बढ़ा है। नतीजतन प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता 2024-25 में 485 ग्राम प्रतिदिन हो गई है। भारत ने अमेरिका के लिए निर्मित वस्तुओं को बाजार नहीं खोले तो अनर्गल टैरिफ लगा दिए।

ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था अब केवल खेती पर निर्भर नहीं रही है। आम बजट में पशुधन, दुग्ध, मुर्गी और मत्स्य पालन को सशक्त करने के ठोस प्रावधान ग्रामीण आजीविका को नया आधार देते हैं। पशु-चिकित्सा सेवाओं के विस्तार और कुशल मानव संसाधन की तैनाती से आय में स्थिरता, रोजगार वृद्धि और खेती पर बढ़ते संकटों में कमी आने की उम्मीद है।

पशुधन का संरक्षण इसलिए जरुरी है, क्योंकि ग्रामों में दूध नियमित नकद आय का पुख्ता आधार बना हुआ है। ग्रामीण रोजगार और अर्थव्यवस्था में इसकी बड़ी भागीदारी है। देश में 2019 में हुई 20वीं पशुधन गणना के अनुसार करीब 14 करोड़ गाय और 11 करोड़ भैंसें हैं। याक,ऊंट,भेड़ और बकरी भी दुधारू पशुओं में गिने जाते हैं। हालांकि अभी तक हमारा राष्ट्रीय आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो महज 20 फीसदी पशुओं का ही आनुवंशिक वर्गीकरण कर पाया है। इससे पता चलता है कि हम अपने पशुधन के प्रति कितने लापरवाह हैं। जबकि घरेलू नस्ल के दुधारू जानवरों को स्थानीय भौगोलिक परिस्थितियों में पलने-बढ़ने व वंश वृद्धि में ज्यादा मजबूत और जुझारु पाया जाता है। ये पशु जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को बर्दाश्त करने में भी ज्यादा समर्थ होते हैं। भारत दूध उत्पादन में दुनिया का अग्रणी देश है। फिर भी दूध की आपूर्ति सिंथेटिक दूध बनाकर और पानी मिलाकर की जा रही है। यूरिया से भी दूध बनाया जा रहा है। दूध की बढ़ती मांग के कारण दूध का कारोबार गांव-गांव तक फैल गया है।

जैविक तकनीक के क्षेत्र में भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए केंद्र सरकार इस क्षेत्र में देश में पहली बार ई-3 (इकोनोमी एनवायरमेंट, एमप्लायमेंट) नीति कुछ समय पहले जारी की हुई है। इसके तहत दूध, खाद्यान्न, पर्यावरण सहित आम जनजीवन के सामने खड़ी होने वाली प्रत्येक चुनौती से निपटने की तैयारी है। इस क्षेत्र में फिलहाल जनता को सबसे बड़ा लाभ जैविक दूध के रूप में मिलने वाला है। पशुधन के बिना मिलने वाला यह जैविक दूध, दूध की कमी पूरा करने के साथ पौष्टिक भी होगा। अब तक बिना किसी सरकारी मदद के दूध का कारोबार फलता-फूलता रहा है। दूध का 70 फीसद कारोबार असंगठित ढांचा संभाल रहा है। इस व्यापार में लगे ज्यादातर लोग अशिक्षित हैं। लेकिन पारंपरिक ज्ञान से न केवल वे दुग्ध उत्पादन में दक्ष हैं, बल्कि दूध के सह-उत्पाद बनाने में भी कुशल हैं। दूध का 30 फीसदी कारोबार संगठित क्षेत्र, मसलन दूध डेयरियों के माध्यम से होता है। देश में दूध के उत्पादन से 96 हजार सहकारी संस्थाएं जुड़ी हैं। 14 राज्यों की भी अपनी दुग्ध सहकारी संस्थाएं हैं। देश में कुल कृषि खाद्य व दूध से जुड़ी प्रसंस्करण संस्थाएं केवल दो प्रतिशत हैं। बावजूद वे अशिक्षित किंतु पारंपरिक ज्ञान से कुशल ग्रामीण स्त्री-पुरुष ही हैं, जो दूध का देशी उपायों से प्रसंस्करण करके दही, घी, मक्खन, पनीर आदि बना रहे हैं। इस कारोबार की विलक्षण खूबी यह भी है कि इससे सात करोड़ से ज्यादा लोगों की आजीविका चलती है।

एक अनुमान क अनुसार भविष्य में जलवायु परिवर्तन और उच्च तापमान के चलते, सालाना दूध उत्पादन में 32 लाख टन की कमी आ सकती है। इस दूध का मूल्य 5,000 करोड़ रुपए के बराबर होगा। इसलिए जरुरी है कि दुधारू पशुओं की सभी प्रजातियों की नस्लों का संरक्षण व संवर्धन किया जाए। इस दृष्टि से 20 हजार पशु चिकित्सक, डेढ़ लाख दक्ष पशु सेवा प्रदाताओं के प्रबंध के साथ, 84 पशु चिकित्सा महाविद्यालय खोलने का प्रावधान इस बजट में किया गया है।

भारत में गिर, राठी, साहिवाल, देवनी, थारपारकर, लाल सिंध जैसे देशी नस्ल के दुधारू पशु उत्तर, मध्य, पूर्व और पश्चिम भारत में पाए जाते हैं। वाकई यदि इनके आनुवंशिक स्वरुप को उन्नत करने और इनके वंश की वृद्धि के कारगर प्रबंध किए जाते हैं तो देसी नस्ल की गायों से दुग्ध का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। हालांकि अब पहली बार आम बजट में पशुधन के संरक्षण को व्यापक महत्व दिया गया है,जो सराहनीय पहल है। यदि यह योजना प्रभावी ढंग से क्रियान्वित होती है तो आने वाले चंद सालों में पशुधन ग्रामीण भारत की रोजगार की पुख्ता गारंटी बन जायेगा। पशुधन जब तकदीर बनेगा तो ग्रामों से पलायन भी थम जाएगा। **(सप्रेस)**

जायद में लगायें मूंग

किस्में

गंगा - 8 (गंगोत्री) : मूंग की किस्म सन् 2001 में विमोचित हुई थी 74-78 दिन में पककर तैयार होने वाली यह किस्म 12-14 क्वि./ हेक्टर पैदावार देती है। इसका दाना छोटा (4.06 ग्राम /100 दाने) तथा चमकीला होता है तथा यह किस्म पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति काफी प्रतिरोधक पायी गई है।

पी.डी.एम. 139 : 2001 में विमोचन की गई मूंग की यह किस्म लगभग 62-65 दिन में पकती है। इसका दाना छोटा होता है तथा 10-12 क्वि. प्रति हेक्टर पैदावार देती है। यह किस्म भी पीतशिरा मोजेक के प्रति न्यूनतम प्रतिरोधी पायी गई है।

आई.पी.एम. 02-03 (2009) : खरीफ एवं जायद मौसम के लिए उपयुक्त मूँग की यह किस्म 62-68 दिन में पककर तैयार हो जाती है एवं इसकी औसत पैदावार 10-11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक हो जाती है। यह किस्म पीतशिरा विषाणु रोग के लिए प्रतिरोधी है।

आई.पी.एम. 02-14 (2010): जायद मौसम के लिए उपयुक्त मूँग की यह किस्म 60-65 दिनों में पककर 11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक की औसत पैदावार देती है। यह पीतशिरा विषाणु रोग के लिए प्रतिरोधी है तथा यह किस्म दक्षिणी राजस्थान हेतु विकसित की गई है।

के. 851 (1982) : 60 से 70 दिन में पककर यह किस्म 8 से 10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज।

पी. डी. एम.-11 (1987): 60 से 65 दिन में पककर यह किस्म 10 से 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है।

पूसा विशाल (2001): यह किस्म लगभग 58-61 दिन में पक कर 12 से 14 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है। इसका दाना मोटा होता है तथा यह किस्म पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति प्रतिरोधक पायी गयी है।

मूंग की अनुशंसित किस्में

केएम 2195 स्वाती, आईपीयू 1026, आईपीयू 11-02, आईपीयू 13-01, गंगा-8, टीजेएम-3, पीकेवीएकेएम-4, आईपीएम 205-7 (विराट), आईपीएम 410-3 (शिखा), टीजेएम-37, पीडीएम-139, हम-16, हम-12, पूसा 0531, जेएम 721, पूसा विशाल, एसएमएल 668, सुकेती।

समर मूंग लुधियाना (एस.एम.एल.)-668 (2003) : 60-65 दिन में पकने वाली यह किस्म 12 से 14 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज देती है तथा पीतशिरा मोजेक रोग के प्रति प्रतिरोधक पायी गयी है।

जहाँ सिंचाई की पूर्ण सुविधा हो वहाँ पर वर्ष में तीसरी फसल के रूप में जायद मूंग की खेती की जा सकती है। इसकी खेती किसान को अतिरिक्त आय देने के साथ भूमि की उर्वराशक्ति बनाये रखने में सहायक है।

बीज उपचार: मूंग में इमिडाक्लोप्रिड 5 ग्राम/किलो बीज दर के हिसाब से बीजोपचार कर बुवाई करें।

खेत की तैयारी: रबी की कटाई के तुरन्त बाद भूमि की आवश्यकतानुसार एक बार जुताई कर खेत को तैयार करें। अंतिम तैयारी के समय ध्यान रखें कि भूमि समतल हो जाए तथा जल निकास अच्छा हो।

भूमि उपचार: बुवाई से पहले प्रति किलो बीज को तीन ग्राम थायराम एवं बाविस्टीन से उपचारित करें।

राइजोबियम कल्चर से उपचार : दलहनी फसलों के बीजों को राईजोबियम से उपचारित करने से अधिक पैदावार होती है। आवश्यकतानुसार गरम पानी में 250 ग्राम गुड़ मिलाकर घोल बनाएँ तथा ठंडा होने पर 600 ग्राम जीवाणु संवर्ध मिला दें। इस मिश्रण की एक हेक्टेयर में बोये जाने वाले बीजों पर भली-भाँति परत चढ़ा दें व छाया में सुखाकर बुवाई करें।

उर्वरक: जायद मूंग हेतु 20 किलो नत्रजन व 40 किलो फॉस्फोरस प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। उर्वरक की पूरी मात्रा बुवाई के समय ऊर कर दे दें।

बीज एवं बुवाई : जायद मूंग की अधिकतम पैदावार के लिए इसकी बुवाई 15 फरवरी से 15 मार्च तक का समय उपयुक्त रहता है। बुवाई हेतु 15-20 किलो बीज की प्रति हेक्टेयर आवश्यकता होती है। कतार से कतार की दूरी 25 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर रखें।

सिंचाई : फूल आने से पूर्व तथा फलियों में दाना बनते समय सिंचाई अत्यन्त आवश्यक है। तापमान एवं भूमि में नमी के अनुसार अतिरिक्त सिंचाई दें।

निराई-गुड़ाई: आवश्यकतानुसार खरपतवार निकालते रहें। 30 दिन की फसल होने तक निराई-गुड़ाई कर दें। बुवाई के पूर्व खरपतवारनाशी फ्लूक्लोरोलीन 0.75 किलो प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिलाने के बाद बुवाई करने से खरपतवार पर प्रभावी नियंत्रण रहता है जिससे अधिक पैदावार मिलती है।

फसल कटाई : फलियों के झड़कर गिरने से होने वाली हानि को रोकने के लिये फसल पकने के बाद किन्तु दाने झड़ने से पहले कटाई कर लें। इसके बाद एक सप्ताह तक सुखा कर गहाई करके दाना निकाल लें।

मक्का एक प्रमुख खाद्यान्न फसल है। विश्व एवं भारत में मक्का एक महत्वपूर्ण खाद्यान्न फसल है। इसका उपयोग पशु चारे के रूप में भी किया जाता है। इसके उत्पादन का 26 प्रतिशत मनुष्य आहार, 11 प्रतिशत जानवरों के आहार, 48 प्रतिशत मुर्गी के आहार, 12 प्रतिशत औद्योगिक उत्पादन एवं शेष स्टार्च एवं बीज के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। इसके अलावा मक्का का प्रयोग कार्न फ्लेक्स, तेल निकालने में, स्टार्च के लिये, पाप कार्न, शराब बनाने आदि के रूप में भी किया जाता है। विश्व के खाद्यान्न उत्पादन में इसका 25 प्रतिशत योगदान है। धान्य फसलों के क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से मक्का का स्थान तीसरा है।

भूमि का चुनाव - मक्के की खेती ऐसी भूमि में की जानी चाहिए जिसका पी.एच.मान 6.0 से 7.0 तक हो। जल भराव मक्के की फसल के लिए बहुत हानिकारक होता है। सामान्यतः मक्का की खेती सभी प्रकार की मृदाओं, बालुई मिट्टी से भारी चिकनी मिट्टी तक में सफलतापूर्वक की जा सकती है।

समय पर बुवाई - खरीफ के लिए बुवाई जून के द्वितीय पखवाड़ा से लेकर जुलाई के प्रथम पखवाड़ा तक व वर्षा आधारित द्विफसली खेती के लिए जून में खरीफ व नवम्बर माह में रबी फसल की बुवाई करें। जायद फसल लेने के लिए बुआई का समय जनवरी से मार्च तक का है।

भूमि की तैयारी- खेत को एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई करने के बाद दो से तीन बार कल्टीवेटर से आड़ी-खड़ी जुताई करके जमीन को भुरभुरी एवं महीन बना लेते हैं। पाटा चलाकर खेत को समतल बना लेना चाहिए। इससे अच्छा अंकुरण होता है। बुआई के 20 दिन पूर्व 20-25 गाड़ी गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर के हिसाब से मिला दिया जाता है।

दाने वाली किस्म	उर्वरक किलोग्राम प्रति हेक्टेयर		
	नाईट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश
शीघ्र पकने वाली	80	50	30
मध्यम पकने वाली	100	60	40
देरी से पकने वाली	120	60	40

उन्नतशील किस्में - जेएम 215, 218, सीएमएच-08-433, नर्मदा मोती (आईसी 9001), जवाहर मक्का 216, आजाद कमल (9803), प्रताप मक्का-5, जवाहर पॉपकार्न 11, जेवीएम 421, चंद्रमणि (आर-2005-2), एचक्यूपीएम-1, 4, 5, पीएमएच 5, को-6, एनएमएच 803, 731, केएमएच 3426, पूसा कम्पोजि-1, 2, जेएम-8, 12।

बीज की मात्रा एवं बीजोपचार- साधारण तया संकर जातियों का 15-20 किलोग्राम बीज एक हेक्टेयर एवं चारे की फसल के लिये 40-50 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होता है। जायद में भुट्टे के लिए खेती करने पर 20 से 25 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। बीज बोने से पहले थायरम या बाविस्टीन नामक फफूंद नाश्क दवा की 2 ग्राम मात्रा प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। बीज की बुआई 3-5 सेन्टी मीटर गहराई पर की जानी चाहिए। बोआई कतार विधि से करने पर अधिक लाभ प्राप्त होता है।

पौध अन्तरण - मौसम के आधार पर अंतराल रखने से उत्पादन अच्छा प्राप्त होता है। जायद मौसम की फसल में कतार से कतार के बीच की दूरी 45-60 सेन्टीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 25 सेंटीमीटर होना चाहिए। सामान्यतः खेत में 25-30 हजार पौधे प्रति एकड़ होने पर वांछित उत्पादन प्राप्त होता है।

उर्वरक व खाद प्रबंधन - मक्के की अनुमानित उपज पाने के लिए 2 वर्ष में एक बार 8-10 टन प्रति हेक्टेयर गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट का प्रयोग करना चाहिए। फास्फोरस एवं पोटाश की संपूर्ण मात्रा बुवाई के समय खेत में मिला देना चाहिए। नत्रजन की मात्रा को तीन भागों में बांटकर प्रयोग करने से उर्वरक की पूरी मात्रा पौधों को प्राप्त होती है। नत्रजल की एक तिहाई मात्रा बुवाई के समय दूसरी तिहाई मात्रा मक्के की घुटने तक ऊंचाई होने पर व अंतिम मात्रा नरमंजरी अवस्था में देना चाहिए। जिंक की कमी वाले क्षेत्रों में 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से जिंक सल्फेट का प्रयोग हर तीसरे वर्ष बुवाई के समय आधार उर्वरक के रूप में करना चाहिए।

जल प्रबंधन - फसल के लिए पानी की अधिकता एवं कमी दोनों ही हानिकारक है। खरीफमें सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। ग्रीष्म कालीन फसल में 10-15 दिन के अंतरात में सिंचाई करते रहना आवश्यक होता है। पूरी फसल अवधि में 8-10 सिंचाई की आवश्यकता होती है। जिसमें तीन सिंचाई फूल आने के पहले व तीन फूल आने के बाद की जाती है।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

भिण्डी लगाकर पाएं अधिक लाभ

भिण्डी सब्जी फसल 75 से 80 दिन में तैयार होकर की पैदावार दे देती है। भिण्डी की सब्जी पौष्टिक, लौह तत्व से परिपूर्ण, कब्ज विनाशक एवं विटामिन युक्त होती है। घरेलू खपत के अलावा कुल सब्जियों के निर्यात में भिण्डी का 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान है।

भिण्डी को गर्मी तथा वर्षा ऋतु में सफलतापूर्वक उगाकर अच्छा लाभ ले सकते हैं। इस समय खाली खेतों में भिण्डी की फसल उगाकर बाजार में अच्छा भाव मिलने से मोटा मुनाफा कमा सकते हैं। भिण्डी की उन्नत किस्मों को उगाकर प्रति एकड़ 50 से 60 क्विंटल उपज ली जा सकती है।

बिजाई का समय: गर्मी की फसल की बिजाई फरवरी–मार्च तथा वर्षा ऋतु में जून जुलाई में की जानी चाहिए। बसंतकालीन उगाई गई भिण्डी की बाजार में ज्यादा मांग रहती है।

खेत की तैयारी: बिजाई से पहले खेत में गोबर खाद डालकर जुताई व पाटा लगाकर अच्छी प्रकार तैयार कर लें। इस समय भिण्डी की बिजाई डोलियों में भी कर सकते हैं।

उन्नत किस्में: व्ही.आर.ओ.–6, पद्मनी, संकर किस्में विजय, विशाल हाइब्रिड–7, विशाल हाइब्रिड–8, अर्का, अनामिका, पूसा मखमली भिण्डी की हिसार उन्नत, पी–7, वर्षा, उपहार तथा पूसा सावनी रोगरोधी एवं ज्यादा उपज देने वाली किस्में हैं। हिसार उन्नत तथा वर्षा उपहार किस्में बोने के 45 दिन बाद फल देना शुरू कर देती है।

बीज मात्रा : बीज दर 15–20 किलो प्रति हेक्टेयर सामान्य, संकर किस्म 6 किलो प्रति हेक्टेयर

बसंतकालीन भिण्डी के लिए 12 से 15 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ बोना चाहिए। बोने से पहले बीज को रातभर पानी में भिगोएं। बिजाई 30 सेंटीमीटर चौड़ी डोलियों में दोनों तरफ किनारों पर 10 सेमी की दूरी पर तथा वर्षा ऋतु में लाइन का फासला 45 से 60 तथा पौधे से पौधा 30 सेमी रखें।

संतुलित खाद एवं उर्वरक : बोते समय एक कट्टा डीएपी तथा 20 किग्रा यूरिया प्रति एकड़ तथा 25 किग्रा यूरिया बोने के तीन सप्ताह बाद तथा 25 किग्रा. फल आने के समय दें।

- गोबर खाद 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर बुवाई
- नत्रजन 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय
- नत्रजन 30 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के 30 दिनों बाद
- नत्रजन 30 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के 45 दिनों बाद
- स्फुर 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय
- पोटाश 60 किलो प्रति हेक्टेयर बुवाई के समय

खरपतवार नियंत्रण : आवश्यकतानुसार निंदाई खरपतवार नियंत्रण 40 दिनों तक करें। एक सप्ताह के अंतराल पर 3 से 4 गुड़ाई पर्याप्त है। 20 से 35 दिन बाद निराई गुड़ाई करें। बिजाई से एक दिन पहले फलूक्लोरोलिन की 400 ग्राम मात्रा 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें तथा 3 से 4 सेमी. गहरी रेक कर देने से भी खरपतवार नियंत्रण हो जाता है।

सिंचाई : साप्ताहिक सिंचाई अनुशंसित है।

तुड़ाई : 45 से 50 दिनों बाद शुरू प्रति 2–3 दिनों के अंतराल में।

उपज : लगभग 150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर।

अन्य उपयोग : गुड़ बनाते समय गुड़ साफ करने के लिए।

सावधानियां : कीटग्रसित फल तोड़कर भिण्डी में दवा दें तथा कीटनाशक दवाओं का प्रयोग कृषि विशेषज्ञों की सलाह से करना चाहिए।

कीटनाशक दवा छिड़काव से पहले फल तोड़ लें तथा छिड़काव के बाद भी जब भिण्डी तोड़े उन्हें अच्छी प्रकार से पानी से धोकर ही खाएं या मंडी ले जाएं एवं फल तुड़ाई के समय मानव स्वास्थ्य हित मेलाथियान या डाइक्लोरमास जैसी सुरक्षित दवाओं का उपयोग करें।

कीट नियंत्रण : रस चूसक कीट जैसे हरा मच्छर, सफेद मक्खी, मोला, फुदका नियंत्रण के लिए मेटासिस्टाक्स 0.025 प्रतिशत या कार्बोरिल 0.02 प्रतिशत 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें। लाल मकड़ी नियंत्रण के लिए घुलनशील गंधक 3 ग्राम प्रति लीटर पानी या डायकोफाल 5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से, फल छेदक इल्ली नियंत्रण के लिए मेटासिस्टाक्स 0.025 प्रतिशत या कार्बोरिल 0.02 प्रतिशत 15 दिनों के अंतराल पर पुनः छिड़काव करें।

जायद का हीरा खीरा

खीरा गर्मी की एक महत्वपूर्ण फसल है, जिसकी खेती गर्मी के अलावा बरसात के मौसम में भी सफलतापूर्वक की जा सकती है। आमतौर पर सलाद के रूप में उपयोग किये जाने वाले खीरे में इरेप्सिन नामक एन्जाइम पाया जाता है, जो प्रोटीन को पचाने में सहायक होता है। इसके अलावा खीरा पानी का अच्छा स्रोत है जिसमें लगभग 96 प्रतिशत पानी पाया जाता है। इसलिये खीरा गर्मी में तरावट देने वाली एक मुख्य सब्जी है। खीरा विटामिन ए, बी–1, बी–6, विटामिन–सी, विटामिन–डी के अलावा पोटेशियम, फास्फोरस व लोहा आदि का एक उत्तम स्रोत है। खीरे के जूस का नियमित सेवन करने से हमारा शरीर बाहर व अन्दर से मजबूत बनता है।

मिट्टी – लगभग सभी प्रकार की भूमियों में की जा सकती है। परन्तु इसकी सफलतापूर्वक खेती के लिये बलुई दोमट तथा मटासी मृदा उत्तम मानी जाती है।

उन्नत किस्में – पूसा संयोग, पाइनसेट, खीरा–90, टेस्टी, मालव–243, गरिमा सुपर, ग्रीन लॉंग, सदोना, एन.सी.एच.–2, रागिनी, संगिनी, मंदाकिनी, मनाली, य.एस.–6125, यू.एस.–6125, यू.एस.–249।

बुवाई का समय व बीज दर – बुवाई का समय स्थान विशेष की जलवायु पर निर्भर करता है। वैसे गर्मी वाली फसल के लिये बीज की बुवाई फरवरी के मध्य से मार्च के पहले सप्ताह तक में करें। एक हेक्टेयर खेत के लिये 2.5 से 3.0 किग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। बीज को उपचारित करने के लिये बीज को चौड़े मुंह वाले मटका में लेकर 2.5 ग्राम थाइरम दवा प्रति किलोग्राम बीज के दर से मिलाते हैं। दवा को बीज में अच्छी प्रकार मिलाने के लिये मटका में दवा व बीज को डालकर दोनों हाथों से कई बार ऊपर–नीचे करें जिससे दवा का आवरण बीज के चारों ओर लग जाये।

बोने की विधि – बुवाई के लिये अच्छी तरह से तैयार खेत में थाले तैयार कर लेते हैं इस थाला के चारों तरफ 2–4 बीज 2–3 सेन्टी मीटर गहराई पर बोयें। खीरे की बुवाई नाली में भी किया जाता है। इस फसल की बुवाई करने के लिये 60 सेन्टीमीटर चौड़ी नालियों का निर्माण करते हैं, जिनके किनारे पर खीरे के बीज की बुवाई की जाती है। दो नालियों के बीच की दूरी 2.5 मीटर रखें। इसके साथ ही एक बेल से दूसरे बेल के नीचे 60 सेन्टीमीटर का फासला भी रखें। ग्रीष्म ऋतु की फसल के लिये बीज की बुवाई करने से पूर्व 12–18 घण्टे तक पानी में भिगोकर रखें, इससे बीज का अंकुरण अच्छा होता है। बीज की बुवाई के लिये कतार से कतार की दूरी 1.0 मीटर व पौध से पौध की दूरी 50 सेन्टीमीटर रखें। खीरे के पौधे से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिये इस फसल को सहारा देना आवश्यक है।

खाद व उर्वरक प्रबंधन – खीरे की एक हेक्टेयर खेत में खेती करने के लिये 30 टन गोबर खाद का उपयोग करें। इसके अतिरिक्त प्रति हेक्टेयर 100 किलोग्राम यूरिया, 125 किग्रा. एन.पी.के., 30 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश का उपयोग करें। फसल में फल लगने प्रारंभ हो जाये तो फसल पर एक या दो तुड़ाई के बाद एक प्रतिशत यूरिया के घोल का पौधों पर छिड़काव करने से पौधों की बढ़वार व फलत अधिक व लम्बे समय तक प्राप्त होती है। खीरे के पौधे से अधिक फल प्राप्त करने के लिये वृद्धि नियामक हार्मोन के प्रयोग से मादा फूलों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। जिसके लिये इथरेल 250 पी.पी.एम सान्द्रता वाले मिश्रण का घोल बनाकर, जब पौधों में दो पत्तियां वाले पौधे हो जाये तब छिड़काना चाहिये, जिससे खीरे के पौधों में मादा पुष्पों की संख्या में वृद्धि हो जाती है। तथा अधिक फल लगने के कारण उपज बढ़ जाती है। 250 पी.पी.एम. का घोल बनाने के लिये आधा मिली. इथरेल/लीटर पानी में घोलना चाहिये।

सिंचाई – फसल में फूल आने की अवस्था में हर पांच दिन के अन्तर पर सिंचाई करें। जिन क्षेत्रों में सिंचाई जल की कमी हो वहां पर टपक सिंचाई लगायें।

इससे खेत में पर्याप्त नमी बनी रहती है, ह्रसाथ ही सिंचाई जल की आवश्यकता भी कम होती है।

कटाई व उपज – खीरे की फसल की अवधि 45 से 75 दिनों की होती है। जिससे लगभग 100 से 150 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होती है। खीरे की बेमौसम फसल पाली हाउस में उगाकर अच्छी आमदनी प्राप्त की जा सकती है।

● अंचल केशरी ● रविंद्र कुमार जैन
● अशोक कुमार पाटिल ● नरेश कुरेचिया
anchalkeshri05@gmail.com

अण्डा उत्पादन को कम करने वाले पोषण से जुड़े रोग

रिकेट्स

कैल्शियम, विटामिन डी 3 या फास्फोरस परिसंचरण की कमी या असंतुलन के कारण होता है। यह रोग तब होता है। जब इन पोषक तत्वों का असंतुलन या आहार कम हो जाता है। कुछ दवाएं और कवक विषाक्त पदार्थ भी रिकेट्स का कारण बन सकते हैं। इस रोग के परिणाम से हड्डियाँ सिकुड़ जाती है, जो अक्सर झुका हुआ होता है, जिससे पक्षियों की खड़े होने और चलने की क्षमता को सीमित करता है। अगर स्थिति जल्दी पकड़ी जाती है तो रिकेट्स का रोकथाम या इलाज किया जा सकता है। सामान्य हड्डी कैल्फिकेशन होने के लिए, कैल्शियम और फास्फोरस पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति की जानी चाहिए और उन्हें एक-दूसरे के लिए सही अनुपात में आपूर्ति करने की भी आवश्यकता है (2:1)। विटामिन डी 3 महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कैल्शियम के अवशोषण को नियंत्रित करता है। माइकोटॉक्सिन मोल्ड या कवक द्वारा उत्पादित विषाक्त पदार्थ होते हैं और यह मुर्गियों पर हानिकारक प्रभाव डाल सकते हैं जिनमें पोषक तत्वों के अवशोषण के साथ हस्तक्षेप भी शामिल है। माइकोटॉक्सिन प्रेरित विकेटों का विषाक्त पदार्थ दूषित फीड को प्रतिस्थापित करके और सामान्य स्तर से तीन गुना विटामिन डी 3 देकर इलाज किया जा सकता है।

पिंजरा लेयर थकान

पिंजरा लेयर थकान को पोषण बीमारी के रूप में वर्णित किया जाता है और पिंजरों में रखी मुर्गियों की मृत्यु का एक प्रमुख कारण होता है। यह स्थिति आमतौर पर अधिकतम अंडे उत्पादन करने वाली मुर्गियों में होती है और यह ऑस्टियोपोरोसिस से भी जुड़ी हो सकती है, पिंजरा लेयर थकान एक ऐसी स्थिति है जो भंगुर हड्डियों का कारण बनती है। पिंजरा लेयर थकान का प्राथमिक कारण तन में कैल्शियम की कमी को माना जाता है, आमतौर पर उच्च उत्पादन के दौरान कैल्शियम के असंतुलित अवशोषण के परिणामस्वरूप हो सकती है जो उत्पादन चरण के दौरान कैल्शियम अवशोषण या हड्डी कैलिफिकेशन को कम करती है। पिंजरा लेयर थकान से पीड़ित मुर्गियां अपने पैरों पर नियंत्रण खो देती हैं। आमतौर पर अंडा उत्पादन में कोई नुकसान नहीं होता है और न ही अंडे की परत की गुणवत्ता या अंडे की अंदर की गुणवत्ता में कोई कमी होती है। चूंकि फर्श में रखने वाली मुर्गियों की तुलना में पिंजरा की परतों में स्थिति अधिक प्रचलित है, इसलिए इस स्थिति को रोकने में व्यायाम अच्छी भूमिका निभाता है। अगर मुर्गियों को पिंजरों से हटा दिया जाये और फर्श पर सामान्य रूप से चलने दिया जाये तो मुर्गियां ठीक हो जाती हैं। पिंजरा लेयर थकान कई मुर्गियों के बजाय अकेली मुर्गी के पिंजरों में अधिक होता है क्योंकि दाना और पानी के लिए प्रतिस्पर्धा करते समय पिंजरे में मुर्गियों का व्यायाम होता है। मुर्गियों को समय-समय पर कैल्शियम को सही अनुपात में खिलाने से मज्जा की हड्डियों में कैल्शियम की कमी नहीं होती है।

मुर्गियो के झुण्ड में तेजी से फैलने वाली विभिन्न रोगजनक एवं संक्रामक बीमारियां है। लेकिन कुछ पोषक तत्व और चयापचय संबंधी विकार भी हैं, यदि उनकी पहचान और उनके लक्षणों का इलाज नहीं किया जाता है। तो वे तुरंत झुंड के माध्यम से फैल जाएंगे।

फैटी यकृत सिंड्रोम

मुर्गियों में उच्च उत्पादन अवधि के दौरान होने वाले सबसे महत्वपूर्ण चयापचय विकारों में से एक है। जिगर में अत्यधिक वसा से संबंधित रोग, झुंड में मृत्यु दर में वृद्धि, बीमारी का पहला संकेत है। कई कारक यकृत की कोशिकाओं में वसा की वृद्धि करते हैं जिसमें उच्च अंडे के उत्पादन, विषाक्त पदार्थ, पोषक असंतुलन, उच्च ऊर्जा आहार की अत्यधिक खपत, यकृत (लिपोट्रॉपिक एजेंट), अंतःस्रावी असंतुलन और आनुवांशिक घटकों से वसा को सक्रिय करने वाले पोषक तत्वों की कमी शामिल है। मुर्गियों में फैटी यकृत सिंड्रोम वसा की अत्यधिक संचय का परिणाम होता है जब लिपोप्रोटीन परिवहन बाधित हो जाता है। उस समय यकृत एवियन प्रजातियों में लिपिड संश्लेषण का मुख्य स्थल है। जो अंडे पैदा करने वाली मुर्गियों में बहुत सक्रिय है। फैटी यकृत सिंड्रोम मृत मुर्गियों की नेक्रोपसी से पता चलता है प्रभावित मुर्गियों के कॉम्ब्स भी पीले होते हैं। इसमें यकृत कोशिकाएं वसा वैक्यूल्स से से भरी होती हैं। पक्षियों के पेट की गुहा में बड़ी मात्रा में वसा पाया जाता है। फैटी यकृत सिंड्रोम तब होता है जब मुर्गिया सकारात्मक ऊर्जा संतुलन में होती हैं फैटी यकृत सिंड्रोम को रोकने के लिए आहार में संशोधन का उपयोग किया जाता है। पूरक वसा के साथ कार्बोहाइड्रेट को प्रतिस्थापित करने से आहार की ऊर्जा की वृद्धि नहीं होती है और यह फायदेमंद होता है। गेहूं और जौ जैसे अन्य अनाज के साथ मकई को बदलना अक्सर फायदेमंद होता है। मछली के भोजन, जई के हल और भोजन जैसे उत्पाद खिलाने से भी फैटी यकृत सिंड्रोम कम होता है। फैटी यकृत सिंड्रोम को रोकने का सबसे अच्छा तरीका पुरानी मुर्गियों में अत्यधिक सकारात्मक ऊर्जा संतुलन को रोकना है। संभावित समस्याओं को देखते हुए मुर्गियों के शारीरिक वजन पर नजर रखी जाती है। जब शरीर के वजन में वृद्धि देखी जाती है, तो आहार में बदलाव करके ऊर्जा के सेवन को प्रतिबंधित किया जाता है।

निष्कर्ष

रिकेट्स पिंजरा लेयर थकान और फैटी यकृत सिंड्रोम आहार सम्बंधित बीमारियां हैं जो मुर्गियां के उत्पादन को प्रभावित करती हैं और मुर्गियों के झुंड की मृत्यु दर के उच्च प्रतिशत के लिए जिम्मेदार हैं। उत्पादन वाले मुर्गियों का आहार विशेष रूप से पूरा होना चाहिए, हालांकि, इन बीमारियों की घटनाएं विशेष रूप से उच्च उत्पादन के समय मुर्गियों में होती हैं वर्तमान में, पिंजरे प्रणालियों में वाणिज्यिक रूप से रखे हुए मुर्गियों कोऑस्टियोपोरोसिस जैसी बीमारियों से बचाने के लिए बहुत कुछ किया जाता है। इस बीमारी को एक उत्पादन बीमारी माना जा सकता है एवं आहार में सुधार करके इनको कम किया जा सकता है। गेहूं का चोकर जैसे कम ऊर्जा फीडस्टफ के साथ कुछ मकई देकर फैटी यकृत सिंड्रोम का इलाज किया जा सकता है।

साहीवाल गाय और उसकी खासियत

साहीवाल नस्ल की गाय पाकिस्तान में साहिवाल जिले से उत्पन्न मानी जाती है। आज साहीवाल भारत और पाकिस्तान में सबसे अच्छा डेयरी नस्लों में से एक है।

शारीरिक विशेषताएं:

गहरा शरीर, ढीली चमड़ी, छोटा सिर व छोटे सींग इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं इसका शरीर साधारणतः लंबा और मांसल होता है। इनकी टांगें छोटी होती हैं, स्वभाव कुछ आलसी और इसकी खाल चिकनी होती है। पूंछ पतली और छोटी होती है।

यह गाय लाल और गहरे भूरा रंग की होती है कभी-कभी इसके शरीर पर सफेद चमकदार धब्बे भी होते हैं। ढीली चमड़ी होने के कारण इसे लोग लोला भी कहते हैं।

नर साहिवाल के पीठ पर बड़ा कूबड़ होता है व इसकी ऊंचाई 136 सेमी और मादा की ऊंचाई 120 सेमी के आसपास होती है।

नर गाय का वजन 450 से 500 किलो और मादा गाय का वजन 300-400 किलो तक होता है।

साहीवाल गाय का दूध उत्पादन:

यह गाय 10 से 16 लीटर तक दूध देने की क्षमता रखती है। अपने एक दुग्धकाल के दौरान ये गायें औसतन 2270 लीटर दूध देती हैं। साथ ही इसके दूध में पर्याप्त वसा होता है। ये विदेशी गायों की तुलना में दूध कम देती हैं, लेकिन इन पर खर्च भी काफी कम होता है। साहीवाल की खूबियों और उसके दूध की गुणवत्ता के चलते वैज्ञानिक इसे सबसे अच्छी देसी दुग्ध उत्पादक गाय मानते हैं। इनकी कम होती संख्या से चिंतित वैज्ञानिक ब्रीडिंग के जरिये देसी गायों की नस्ल सुधार कर उन्हें साहीवाल में बदलने पर जोर दे रहे हैं, जिसके तहत देसी गाय की पांचवीं पीढ़ी पूर्णतः साहीवाल में बदलने में कामयाबी हासिल हुई है।

साहीवाल गाय की अन्य विशेषता:

इसका शरीर गर्मी, परजीवी और किलनी प्रतिरोधी होता है जिससे इसे पालने में अधिकम मशक्कत नहीं करनी पड़ती है और डेरी किसानों को पालने में बहुत फायदा होता है।

इस गाय की अन्य विशेषताएं हैं:-

- उच्च दूध की पैदावार
- प्रजनन की आसानी ● सूखा प्रतिरोधी
- अच्छा स्वभाव अच्छी देखभाल करने पर ये कहीं भी रह सकती हैं।

गर्मी सहने की अच्छी क्षमता और उच्च दुग्ध उत्पादन के कारण इन गायों को एशिया, अफ्रीका और कई कैरेबियाई देशों में भी निर्यात किया गया है।

- मुख्यतः पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, बिहार व मध्यप्रदेश में पाया जाता है।
- दुग्ध उत्पादन- ग्रामीण स्थितियों में 1350 किलोग्राम
- व्यावसायिक फार्म की स्थिति में - 2100 किलोग्राम
- प्रथम प्रजनन की उम्र 32-36 महीने
- प्रजनन की अवधि में अंतराल -15 महीने।

कहां मिलेगी : करनाल, अबोहर, हिसार के क्षेत्र में।

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

समस्या– सरसों फसल में पौध संरक्षण के हिसाब से वर्तमान में क्या कार्य करें विस्तार से बतायें।

– मनमोहन मौर्य

समाधान– सरसों की फसल वर्तमान में फूल–फली की अवस्था में चल रही है इस मौके पर कीट/रोग के आक्रमण पर निरीक्षण और उपाय तत्परता से किया जाना जरूरी होगा। आप निम्न बातों पर ध्यान दें।

- निचली पत्तियों पर यदि लाल रंग के किनारे दिख रहे हों तो इसे जिंक की कमी मानकर एक छिड़काव 1 किलो जिंक के साथ 5 किलो यूरिया 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।
- पत्तियों में यदि सफेद फफोले दिखाई दे रहे हों तो 600 ग्राम डाईथेन एम 45 250–300 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।
- इस छिड़काव से पत्तियों पर आने वाले अन्य रोगों को भी रोका जा सकता है।
- माहो की रोकथाम बहुत ही जरूरी है इसके लिये 250 से 400 मि.ली. मेटासिस्टॉक्स 25 ई.सी. इतने ही लीटर पानी में मिलाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़कें।

समस्या– चने की इल्ली का प्रकोप आने लगा है, कौन सी दवा डालें कृपया बतायें।

समाधान– चने की इल्ली से निपटने के लिये एकीकृत–नाशीजीव प्रबंधन (आई.पी.एम.) को बनाया गया जो निम्नानुसार है। जिसे हर कृषक यदि अंगीकृत कर ले तो चने की इल्ली कोई समस्या नहीं रह पायेगी।

- गहरी जुताई तथा मेढ़ों की सफाई।
- चने की बुआई अक्टूबर 15 तक करें।
- मिश्रित फसल लगायें, जौ तथा सरसों की एक कतार साथ दो कतार चने की लगायें।
- अफ्रीकन गेंदा को चने के फसल में कतारों के बीच तथा आसपास लगायें।
- खेत में एक हेक्टर में 20–25 टी आकार की खूटियां भी लगायें।
- फेरोमेन ट्रेप का उपयोग करें।
- घेटी अवस्था पर 2–3 इल्ली 1 मीटर कतार में आने पर 50 मि.ली. फेनवलरेट 20 ई.सी. या 50 मि.ली. साइपरमेथिन 25 ई.सी. को 100 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।
- इसके अलावा प्रोफेनोफास 50 ई.सी. 2 मिली/लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कें।

समस्या– में अपने बगीचे में बेर के पौधे लगाना चाहता हूं, अच्छी पौध कहां मिलेगी, अन्य जानकारी भी दें।

– अभय वर्मा

समाधान – बेर एक सहिष्णु पौधा है कम पानी, खराब भूमि में भी पनप जाता है बेर में अनेक प्रकार के पौष्टिक पदार्थ पाय जाते हैं आमतौर पर सभी इसका उपयोग करते हैं आप निम्न तकनीकी अपनायें।

- साधारण भूमि का चुनाव भी इसके लिये किया जा सकता है।

- पौधों की रोपाई पौध से पौध 10 मीटर दूरी पर की जाती है। 60×60×60 से.मी. के गड्ढे तैयार कर गोबर खाद डालें। संपर्क करें–
- उप संचालक, उद्यानिकी विभाग, बुरहानपुर

समस्या– गेहूं में सूक्ष्म तत्व जस्ते की कमी के क्या लक्षण होते हैं कैसे उपचार किया जाये।

– सुभाष यादव

समाधान– गेहूं तथा धान पर जिंक की कमी के लक्षण समान रूप से देखे जा सकते हैं।

- फसल में जिंक की कमी के लक्षण पहली सिंचाई के उपरांत कल्ले निकलते वक्त देखे जा सकते हैं।
- ऊपर से तीसरी पत्तियों पर सफेद/तांबिया रंग के धब्बे दिखाई देते हैं।
- प्रभावित पत्तियां बीच से सिकुड़ जाती हैं। पौधों का विकास अवरोधित हो जाता है। लगातार तापमान कम रहने की स्थिति में प्रकोप बढ़ जाता है। उपचार के लिये निम्न उपाय करें।
- 15–25 किलो जिंक सल्फेट प्रति हेक्टर की दर से डालें। एक साल का उपचार का असर दो वर्ष रहता है।
- खड़ी फसल में छिड़काव के लिये एक हेक्टर क्षेत्र के लिये 5 किलो जिंक सल्फेट और 2–5 किलो बुझा हुआ चूना 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिनों के अंतर से दो छिड़काव करें।
- जिंक सल्फेट और चूना अलग–अलग कम पानी में घोले छानकर हजार लीटर पानी में मिलायें।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.) फोन- 0755-4248100,2554864

प्राकृतिक खेती – अक्सर पूछे जाने वाले सवाल

रिसोर्स और सपोर्ट

क्रॉप विविधता क्या है?

क्रॉप डाइवर्सिफ़िकेशन या फसल विविधता किसी दिए गए खेती वाले इलाके में, फसल चक्र और/या संगठित होकर एक से ज़्यादा किस्में उगाने का तरीका है।

मिट्टी में न्यूनतम गड़बड़ी का क्या मतलब है?

प्राकृतिक खेती में मिट्टी तैयार करते समय अपनाई जाने वाली क्रियाएं जो मिट्टी में गड़बड़ी को कम करती हैं।

मिट्टी में कम से कम गड़बड़ी कैसे की जा सकती है?

इसे इन तरीकों से किया जा सकता है

– कम जुताई के तरीके (जैसे जुताई, हैरो चलाना, और सभी जुताई के काम जो आमतौर पर बीज के अंकुरण के लिए मिट्टी तैयार करने के लिए किए जाते हैं।

– सीधे बीज बोना।

– प्राकृतिक खाद का सीधा इस्तेमाल।

व्हाप्सा क्या है?

यह वह स्थिति है जहाँ दो मिट्टी के कणों के बीच की जगह में हवा और पानी के अणु दोनों मौजूद होते हैं। यह मिट्टी की सूक्ष्म जलवायु है जिस पर मिट्टी के जीव और जड़ें अपनी ज़्यादातर नमी और कुछ पोषक तत्वों के लिए निर्भर करती हैं।

मल्चिंग या पलवार क्या है?

मल्चिंग या पलवार का मतलब है मिट्टी की सतह को जिंदा फसलों और पुआल (मरे हुए पौधों का बायोमास) दोनों का इस्तेमाल करके ढंकना।

पलवार कितने तरह की होती है?

पलवार दो तरह की होती है–

फसल के बचे हुए हिस्से की पलवार : कटाई के बाद बची हुई फसल की चीज़ें जैसे सूखे पत्ते, पुआल, छोटी टहनियाँ वगैरह मिट्टी को ढंकने के लिए इस्तेमाल की जाती हैं।

जीवित पलवार : लाइव पलवार में मुख्य फसल की लाइनों में कम समय वाली फसलों के बहु फसली/अंतरवर्तीय बनाए जाते हैं। उदाहरण – गेहूं/ चावल (पोटाश, फॉस्फेट और सल्फर जैसे पोषण देते हैं) को दालों (नाइट्रोजन-स्थापन पौधे) के साथ लगाना।

बहुफसली खेती क्या है?

मल्टी-क्रॉपिंग का मतलब है एक ही ज़मीन पर एक साथ दो या दो से ज़्यादा फसलें उगाना।

खेती में केंचुआ क्या भूमिका निभाता है?

केंचुए जैव अपघटन वाली चीज़ों को खाते हैं और उन्हें अच्छी खाद में बदल देते हैं। केंचुए मिट्टी को जोतते हैं और मिलाते हैं। उनकी सुरंग बनाने की प्रक्रिया मिट्टी को ढीला करती है ताकि पानी और न्यूट्रिएंट्स नीचे जा सकें।

कृषक जगत बागवानी सीरीज

साग-सब्जी उत्पादन उन्नत तकनीक	सब्जियों में पौध संरक्षण	मशरूम एक लाभ अनेक	मिर्च की उन्नत खेती	केला उत्पादन	गुलाब बहुरंगी संशोधित संस्करण
रु. 95	रु. 75	रु. 45	रु. 55	रु. 70	रु. 75
कोड : 016	कोड : 017	कोड : 019	कोड : 020	कोड : 025	कोड : 027

पपीता	अदरक	फलों की खेती	सजाएं फूलों से बगिया	घर की बगिया
रु. 55	रु. 55	रु. 75	रु. 65	रु. 95
कोड : 031	कोड : 032	कोड : 040	कोड : 041	कोड : 050

डाक द्वारा मंगवाने हेतु निम्नलिखित जानकारी के साथ हमारे पते पर ड्राफ्ट/ मनीऑर्डर के साथ ऑर्डर कीजिए . किताब कोड नं. पर ✔ निशान लगाएं

016 ☐ 017 ☐ 019 ☐ 020 ☐ 025 ☐ 027 ☐ 031 ☐ 032 ☐ 034 ☐ 040 ☐ 041 ☐ 050 ☐

नाम ______

ग्राम ______ पोस्ट ______ तह. ______

जिला ______ फोन/मोबा. ______

कुल राशि ______ ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या ______

संलग्न ड्राफ्ट नं. ______ मनी आर्डर रसीद क्र. ______ वी.पी. भेजें ☐

संस्थाओं द्वारा अधिक संख्या में प्रतियां खरीदने पर आकर्षक छूट. अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें.

कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम
14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल – 462011
फोन : 0755-4248100, 2554864, मो.: 9826255861, Email-info@krishakjagat.org
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास, इंदौर (म.प्र.) मो. : 9826021837

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

स्वास्थ्य/शिक्षण

'पालक' बच्चों की सेहत के लिए फायदेमंद

शायद आपके बच्चों को भी पपई द सेलर मैन जैसे कॉर्टून से पालक खाने की प्रेरणा मिली हो। पालक को खाते ही उसमें गजब की शक्ति आ जाती है। अगर आदत नहीं तो आज ही अपने बच्चे को पालक खाने की आदत डालें। जी हां पालक को आयरन का पावरहाउस कहा जाता है। लेकिन क्या आप जानते है कि पालक में कैलोरी, प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, फाइबर और मिनरल तत्व होता हैं। साथ ही पालक में विभिन्न मिनरल तत्व जैसे कैल्शियम, मैग्नीशियम, आयरन तथा विटामिन ए, बी, सी आदि प्रचुर मात्रा में पाया जाते हैं। इसलिए इसमें मौजूद यह सभी तत्व बढ़ते बच्चों की सेहत के लिए बेहद फायदेमंद होता है। आइए जानें पालक बच्चों की सेहत को किस तरह फायदेमंद होता है।

हड्डियां और मसल्स बनती हैं मजबूत

कैल्शियम, मैग्नेशियम और फोस्फोरस से भरपूर पालक हड्डियों के लिए फायदेमंद है। यह हड्डियों को स्वस्थ बनाने के साथ मजबूत बनाता है। इसके अलावा पालक विटामिन के का एक बहुत अच्छा स्रोत है, जो हड्डियों में कैल्शियम को बनाए रखने में मदद करता है। आयरन के साथ-साथ इसमें प्रोटीन के साथ एमिनो एसिड भी पाया जाता है। जो किसी भी हाई प्रोटीन फूड से बेहतर होता है।

इम्यूनिटी को बेहतर बनाए

मल्टीविटामिन पालक में सभी तरह के खास विटामिन पाए जाते है। जिससे बच्चे का इम्यून सिस्टम मजबूत रहता है। इतना ही नहीं, पालक विटामिन के का सबसे अच्छा स्रोत है। और इसमें पाया जाने वाला बीटा कैरोटिन के कारण इसके सेवन से बच्चों का पाचनतंत्र मजबूत होता है और यह भूख बढ़ाने में सहायक होता है। अगर आपका बच्चा खाना खाने में अनाकानी करता है तो उसे आज से ही पालक खाने को दें।

आंखों के लिए अच्छा

अगर आप चाहते हैं कि आपके बच्चे की आंखों पर चश्मा न लगें तो उसके आहार में पालक को शामिल करें। पालक बच्चों की आंखों के लिए बेहद अच्छा होता है इसमें विटामिन ए और ल्यूटिन जैसे पोषक तत्व मौजूद होते है। विटामिन ए कॉर्निया की रक्षा करने में मदद करता है और ल्यूटिन पराबैंगनी प्रकाश से आंखों की रक्षा करता है।

डिहाइड्रेशन से बचाए

छोटे बच्चों में पानी की कमी बड़े बच्चों की तुलना में ज्यादा पाई जाती है। ऐसा इसलिए क्योंकि वे बड़े की तुलना में ज्यादा जल्दी तरल पदार्थ खोते हैं। और पालक में पानी की मात्रा लगभग 90 प्रतिशत होती है और यह प्राकृतिक तरल पदार्थ से भरा होता है। इसी वजह से यह बच्चों को डिहाइड्रेशन से बचाता हैं।

मस्से से पायें छुटकारा

मस्से विषाणु संक्रमण से पैदा होते हैं। प्रायः मानव पेपिल्लोमैविरस् नामक विषाणु की कोई प्रजाति इसका कारण होती है। लगभग दस प्रकार के मस्से होते हैं। मस्से संक्रमण से हो सकते हैं और शरीर में वहाँ प्रवेश करते हैं जहाँ त्वचा कटी-फटी हो। प्रायः ये कुछ माह में स्वयं समाप्त हो जाते हैं किन्तु कभी-कभी वर्षों तक बने रह सकते हैं या पुनः हो सकते हैं। शरीर पर अनचाहे मस्सों के उग जाने से मन से बार-बार यही आवाज आती है कि इन मस्सों से छुटकारा कैसे पाया जा सकता है। ये मस्से आपकी सुंदरता में धब्बा बन कर आपको परेशान कर रहे हैं तो इन आसान उपायों की सहायता से आप इनसे छुटकारा पा सकते हैं।

● रोज दो-तीन बार प्याज का लेप मस्सों पर करने से ये मस्से जड़ से खत्म हो जाएंगे। प्याज को काट कर मस्से पर घिसना भी लाभप्रद है। ● शरीर की त्वचा पर यदि छोटे-छोटे काले मस्से हो गए हों तो उन पर काजू के छिलकों का लेप लगाने से मस्से साफ हो जाते हैं।

● चूना और घी एक समान मात्रा में लेकर दोनों को खूब फेंटकर सुरक्षित रखें। उसे दिन में 3-4 बार मस्सों पर लगाएं। उससे मस्से जड़ से हट जाएंगे और दोबारा नहीं होंगे।

● सोडा कास्टिक 6 ग्राम को 250 ग्राम की बोतल में घोलकर सुरक्षित जगह पर रख दें। सावधानी से रूई की सहायता से मस्सों पर लगाएं।

मस्सों को दूर करने के लिए यह रामबाण दवा है।

● बी काम्पलेक्स, विटामिन ए, सी, ई युक्तआहार के सेवन से मस्सों को दूर किया जा सकता है। मस्सों से छुटकारा पाने के लिए पोटेशियम बहुत लाभदायक है। पोटेशियम बहुत सी साग-सब्जी और फलों में पाया जाता है। जैसे सेब केला, अंगूर, आलू, मशरूम, टमाटर, पालक इत्यादि।

● खट्टी सेब का रस मस्सों पर लगाने से मस्सों के छोटे-छोटे टुकड़े होकर गिर जाएंगे।

● मुहासे या मस्से हों तो फिटकरी और काली मिर्च आधा-आधा ग्राम पानी में पीसकर मुहा पर मलने से लाभ होता है।

● बरगद के पेड़ के पत्तों का रस मस्सों के उपचार के लिए बहुत ही असरदार होता है। इस प्रयोग से त्वचा सौम्य हो जाती है और मस्से अपने आप गिर जाते हैं।

● एक चम्मच कोथमीर के रस में एक चुटकी हल्दी डालकर सेवन करने से मस्सों से राहत मिलती है।

नुस्खे आजमाएं, लाभ उठाएं

● भोजन में घी, दूध, चावल, उड़द, नारियल, मलाई, मक्खन, शहद, मौसमी फल, हलवा, हरी साग-भाजी, टमाटर, गाजर, आंवला आदि का सेवन करना चाहिए।

● बादाम का हलवा, दूध में पकाया हुआ छुहारा, मीठा अनार, प्याज का रस, नारियल की गिरी और दूध की खीर, उड़द दाल का लड्डू, गन्ना रस, सौंठ और काली मिर्च तथा मैथी का लड्डू बहुत फायदेमंद है। योग्य वैद्य की सलाह अवश्य लेनी चाहिए, ताकि अपने शरीर के अनुकूल पथ्य-अपथ्य का चयन किया जा सके।

● चिकनाईयुक्त, मधुर, लवण और अम्ल रस वाले पदार्थ का सेवन करके अपना स्वास्थ्य बनाए रखें। बासी, दुर्गंधयुक्त अधिक चटपटे मसालेदार खानपान से बचना ही श्रेयस्कर है।

● ठीक समय पर, चबा-चबाकर प्रसन्नता पूर्वक भोजन करना चाहिए। भोजन के पूर्व नींबू पानी और भोजन के पश्चात छाछ पीना लाभदायक होता है।

● रूखे, कटु-तिक्त-कषाय, अति शीतल और वात प्रधान भोज्य पदार्थ न खाएं। अन्यथा जोड़ों के दर्द, गठिया और सायटिका से पीड़ित हो सकते हैं। इसी प्रकार अधिक खटाई से भी बचें, ताकि खांसी-सर्दी, जुकाम, नजला आदि से बचाव हो सके। नींबू और ताजा दही वर्जित नहीं है।

● अधिक देर तक भूखे न रहें, क्योंकि जठराग्नि की प्रबलता के कारण यथा समय भोजन नहीं करने से यह अग्नि शरीर की धातुओं को जला डालती है, जिससे जीवन शक्ति का क्षय होता है।

● सेहत बनाने के लिये प्रतिदिन स्नान भी जरूरी है। कुछ लोग ठंड के डर से कई दिन तक नहाते नहीं, यह उचित नहीं। पानी कुनकुना कर लेना चाहिए। अत्यधिक ठंडा और अधिक गर्म पानी नुकसान पहुंचाता है।

● मल-मूत्र विसर्जन में आलस्य नहीं करना चाहिए। रात को सिर ढंककर सोना भी उचित नहीं होता।

रसोई टिप्स

● सब्जी में मिर्च अधिक होने पर थोड़ा दही डालकर पका दें।

● नींबू की बाहरी सतह पर तेल लगाकर फ्रिज में रखें। नींबू अधिक दिनों तक ताजा बने रहेंगे।

● यदि दो गिलास आपस में फंस गए हैं, तो उन्हें रातभर फ्रिज में रखें सुबह आसानी से अलग हो जाएंगे।

● चावल बनाने से पहले यदि नमक मिले पानी भिगोकर रखा जाए। तो चावल सफेद बनेंगे।

● ब्रेड क्रंब्स की जगह सूजी या पिसे मुरमुरे काम में लाए जा सकते हैं।

● दाल या तरकारी के जल जाने पर टमाटर के छोटे टुकड़े करके साथ में जीरे का बघार डालने से जलने की बदबू दूर हो जाती है।

● यदि कुचले आलू बहुत नर्म हो जाएं, तो सफेद ब्रेड का चूरा डालकर अच्छी तरह मलिए, जिससे आलू सूखे व कुरकुरे हो जाएंगे।

● घी में पान का पत्ता या नमक का टुकड़ा डाल देने से घी बहुत दिनों तक रखा जा सकता है।

● मूली की सब्जी बनाते समय थोड़े पालक के पत्ते डालने से सब्जी जल्दी पकती है।

● जब भी दही बड़े बनाने हों तो उसके लिये हमेशा नयी दाल का प्रयोग करें। पुरानी दाल के बड़े बनाने में बड़े मुलायम नहीं बनेंगे।

● उबलते हुए दूध में चीनी कभी न मिलाएं इससे दूध फटने का खतरा रहता है।

● सब्जी जल्दी पक जाये और उसकी रंगत बनी रहे। इसके लिये सब्जी पकाते समय उसमें एक चुटकी चीनी डाल दें।

● यदि टमाटर पिलपिले हो रहे हों तो इन्हें बर्फ के पानी में कुछ देर रख दें। इससे टमाटरों में कड़ापन आ जायेगा।

● नमक में अक्सर सीलन आ जाती है। इससे बचने के लिये नमक में कुछ चावल के दाने डाल दें।

पाक्षिक पंचांग

9 फरवरी से 22 फरवरी 2026 तक
विक्रम संवत् 2082
फाल्गुन कृष्ण 1 से फाल्गुन शुक्ल 5 तक

दि.	माह	वार		तिथि/त्यौहार
9	फरवरी	सोम	फाल्गुन कृष्ण	8 सीताष्टमी
10	फरवरी	मंगल	----------	8
11	फरवरी	बुध	----------	9
12	फरवरी	गुरु	----------	10
13	फरवरी	शुक्र	----------	11 विजया एकादशी
14	फरवरी	शनि	----------	12 प्रदोष व्रत
15	फरवरी	रवि	----------	13 महाशिवरात्रि
16	फरवरी	सोम	----------	14
17	फरवरी	मंगल	----------	30 अमावस्या पंचक 9.30 दिन से
18	फरवरी	बुध	फाल्गुन शुक्ल	1 पंचक
19	फरवरी	गुरु	----------	2 पंचक
20	फरवरी	शुक्र	----------	3 पंचक
21	फरवरी	शनि	----------	4 विनायकी चतुर्थी, पंचक समाप्त 8.12 रात्रि
22	फरवरी	रवि	----------	5

ऑनलाईन सदस्यता के लिए लॉग इन करें
www.krishakjagat.org

फसल क्षति मुआवजा प्रकरणों की जाँच के लिए जिला स्तरीय दल गठित

अंबिकापुर। विकासखण्ड मैनपाट के ग्राम उरंगा-बरिमा में छत्तीसगढ़ मिनरल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा अधिग्रहित भूमि के फसल क्षति मुआवजा वितरण से संबंधित प्रकाशित समाचार को जिला प्रशासन ने गंभीरता से लिया है। दैनिक समाचार पत्र में मुआवजा वितरण में कथित अनियमितताओं संबंधी खबर प्रकाशित होने के बाद कलेक्टर श्री अजीत वसंत ने त्वरित संज्ञान लेते हुए मामले की निष्पक्ष जाँच हेतु जिला स्तरीय दल का गठन किया है।

जाँच दल में शामिल अधिकारी-

श्री सुनील कुमार नायक, अपर कलेक्टर, सरगुजा अध्यक्ष, श्री अनिल कुमार साहू, खनिज अधिकारी सदस्य,श्री तेजू यादव, सहायक अधीक्षक भू-अभिलेख द् सदस्य,श्री हूल सिंह, राजस्व निरीक्षक सदस्य,श्री राहुल सिंह, राजस्व निरीक्षक सदस्य । कलेक्टर ने जाँच दल को निर्देश दिए गए हैं कि ग्राम उरंगा-बरिमा के फसल क्षति मुआवजा प्रकरणों की विस्तृत जाँच कर एक सप्ताह के भीतर प्रतिवेदन कलेक्टर कार्यालय में प्रस्तुत करें।

मधुमक्खी पालन से खुला किसानों की आर्थिक समृद्धि का द्वार

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन की राज्य पोषित परागण योजना के अंतर्गत जिला कोरबा में मधुमक्खी पालन को प्रभावी रूप से बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे किसानों के जीवन में सकारात्मक और स्थायी बदलाव देखने को मिल रहे हैं। विशेष रूप से विकासखंड पोंड़ी-उपरोड़ा के ग्राम कुटेश्वर, नगोई, बझेरा, सिंघिया एवं जुराली के किसानों ने इस योजना के माध्यम से पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर अतिरिक्त आय के नए स्रोत विकसित किए हैं।

पूर्व में केवल धान की खेती पर निर्भर इन किसानों की आय सीमित थी, किंतु मधुमक्खी पालन ने कम लागत में अधिक लाभ का अवसर प्रदान कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है। इस योजना के अंतर्गत किसानों और युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ते हुए आत्मनिर्भरता की दिशा में ठोस कदम उठाए गए हैं।

किसानों ने उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों से मार्गदर्शन प्राप्त कर कृषि उद्यान केंद्र कटघोरा एवं शासकीय उद्यान रोपणी में मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के उपरांत किसानों ने तकनीकी एवं व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से उत्पादन प्रारंभ किया। एक मधुमक्खी पेटी से वर्षभर में लगभग 15 से 25 किलोग्राम शहद का उत्पादन होता है, वहीं 20 पेटियों से 1 से 2 लाख रुपये तक की वार्षिक आमदनी संभव है।

मधुमक्खियों द्वारा फसलों में परागण बढ़ने से सब्जी, दलहन, तिलहन एवं फलदार फसलों की उत्पादकता 15 से 30 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। शहद के अतिरिक्त मोम, पराग, रॉयल जेली एवं मधुमक्खी विष की औषधि, कॉस्मेटिक एवं आयुर्वेदिक उद्योगों में बढ़ती मांग ने किसानों के लिए आय के नए द्वार खोले हैं। योजना के अंतर्गत प्रत्येक हितग्राही को 45 मधुमक्खी कॉलोनियां एवं 45 पेटिकाएं प्रदान की गई हैं। एक छत्ते की लागत 2000 रुपये निर्धारित है, जिसमें 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम 1000 रुपये का अनुदान शासन द्वारा दिया जा रहा है। कम भूमि में भी संचालित होने वाली यह योजना किसानों के लिए लाभकारी सिद्ध हो रही है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बना रही है।

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, विज्ञापन, समाचार, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

उत्तम कुमार देशमुख
(जिला प्रतिनिधि)
नावेल्टी न्यूज एजेंसी
ग्राम निकुंम, जिला दुर्ग (छ.ग.)
मो. : 8236059865

कृषक जगत जिला प्रतिनिधि

कृषक जगत की वार्षिक सदस्यता, छोटे-बड़े विज्ञापन, कृषि समाचार, कृषि लेख, कृषि पुस्तकें एवं कृषि डायरी हेतु संपर्क करें-

बलभद्र शर्मा
डागा चौक वार्ड नं. 10, खरियार रोड, नुआपाड़ा (उड़ीसा)
पिन नं. 766104
मो. : 6371774361

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक

- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ◻ भोपाल ◻ जयपुर ◻ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम ....
....
ग्राम .... पो. ....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : ....
वि.ख. .... तह. ....
जिला .... पिन ◻◻◻◻◻◻ राज्य ....
शिक्षा .... भूमि .... उम्र ....
ट्रैक्टर/मॉडल .... फोन/मो. ....
ई-मेल ....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये .... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. .... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php

Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.), मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

उन्नत कृषि तकनीक से मूंगफली उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि

रायपुर। कृषि विभाग की केन्द्र प्रवर्तित नेशनल मिशन ऑन एडीबल ऑयल-ऑयल सीड योजना मुंगेली जिले के किसानों के लिए लाभकारी सिद्ध हो रही है। योजना के अंतर्गत प्रदाय उन्नत बीज एवं वैज्ञानिक कृषि तकनीकों को अपनाकर मुंगेली विकासखंड के ग्राम बरईदहरा निवासी कृषक श्री नागेश्वर सिंह परिहार ने खरीफ मौसम में मूंगफली उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि प्राप्त करते हुए 1.18 लाख रुपये की आय अर्जित की है।

59 वर्षीय कृषक श्री परिहार स्नातक (बी.ए.) शिक्षित हैं और पारंपरिक कृषि अनुभव के साथ आधुनिक तकनीकों को अपनाने में अग्रसर रहते हैं। उनके पास कुल 2 हेक्टेयर कृषि भूमि है, जिसमें से 1.5 हेक्टेयर क्षेत्र में उन्होंने उक्त योजना के अंतर्गत मूंगफली फसल का उत्पादन किया। कृषि विभाग द्वारा उन्हें 1.5 हेक्टेयर के लिए 150 किलोग्राम उच्च गुणवत्ता युक्त मूंगफली बीज नि:शुल्क उपलब्ध कराया गया।

योजना के तहत विभागीय अमले एवं ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारियों द्वारा उन्हें कतार बोनी, बीजोपचार, जैविक आदानों के उपयोग, गुणवत्तायुक्त बीज चयन तथा समुचित फसल प्रबंधन की जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त, योजनांतर्गत आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में मूंगफली फसल की संपूर्ण शस्य क्रियाएँ, फसल की क्रांतिक अवस्थाएँ, खाद एवं उर्वरक का समन्वित उपयोग तथा बीज उत्पादन के मापदण्डों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षण में प्राप्त वैज्ञानिक सलाहों को अपनाकर श्री परिहार ने फसल प्रबंधन को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित किया, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मूंगफली फसल का उत्पादन पूर्व वर्षों की तुलना में अधिक रहा। नि:शुल्क बीज उपलब्ध होने से बीज क्रय पर होने वाला व्यय भी बचा, जिससे उनकी आय में प्रत्यक्ष वृद्धि हुई। कृषक श्री परिहार ने योजना को अत्यंत उपयोगी बताते हुए अन्य कृषकों से भी शासकीय योजनाओं का लाभ लेकर वैज्ञानिक पद्धतियों को अपनाने की अपील की है।

औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती के प्रति किसानों बढ़ा रूझान

रायपुर। औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती में किसानों की रुचि तेजी से बढ़ी है, जिसका मुख्य कारण पारंपरिक फसलों की तुलना में अधिक लाभ, कम लागत और बाजार में मांग है। अश्वगंधा, लेमनग्रास, तुलसी और खस जैसी फसलों से किसान प्रति एकड़ अच्छी कमाई कर रहे हैं, जिसमें सरकार की सब्सिडी और तकनीकी सहायता भी मदद कर रही है।

औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती को बढ़ावा-

छत्तीसगढ़ युवा प्रगतिशील किसान संघ द्वारा आयोजित किसान मेले में छत्तीसगढ़ आदिवासी, स्थानीय स्वास्थ्य परंपरा एवं औषधि पादप बोर्ड ने सक्रिय सहभागिता की। कुम्हारी, दुर्ग में गत दिनों आयोजित दो दिवसीय किसान मेले में बोर्ड द्वारा लगाए गए स्टॉल के माध्यम से औषधीय एवं सुगंधित पौधों की खेती को बढ़ावा देने हेतु संचालित शासकीय योजनाओं एवं कार्यों की जानकारी दी गई।

किसानों के विशेष आकर्षण का केंद्र लेमनग्रास की खेती-

स्टॉल पर विभिन्न आकर्षक मॉडलों के माध्यम से खेती के सफल उदाहरण प्रस्तुत किए गए। इनमें नदी किनारे की रेतीली एवं अनुपयोगी भूमि पर खस की खेती, महिला सशक्तिकरण के लिए घरों की बाड़ी में सिंदूरी, सतावर एवं ब्राह्मी का रोपण तथा धान की खेती के कन्वर्जेंस के रूप में लेमनग्रास की खेती के मिनिएचर मॉडल शामिल रहे। ये मॉडल किसानों एवं आमजनों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र बने।

औषधीय एवं सुगंधित पौधे मच्छर एवं कीट-पतंगों को दूर भगाने में सहायक-

उल्लेखनीय है कि इस किसान मेले में बोर्ड द्वारा औषधीय एवं सुगंधित पौधों से तैयार उत्पादों का नि:शुल्क वितरण भी किया गया। अनंतमूल की जड़ से तैयार नन्नारी शरबत किसानों एवं आमजनों परोसा गया, जो शरीर को आंतरिक रूप से ठंडक प्रदान करता है और ग्रीष्म ऋतु में लू से बचाव में सहायक है। इसके साथ ही लेमनग्रास तेल की 10 मि.ली. शीशियों का नि:शुल्क वितरण किया गया। लेमनग्रास तेल का उपयोग मानसिक शांति, सुगंधित वातावरण बनाने, मच्छर एवं कीट-पतंगों को दूर भगाने तथा तेल में मिलाकर मालिश के लिए किया जाता है। किसान मेले में लगभग 1000 से 1500 किसानों एवं आमजनों ने बोर्ड के स्टॉल से जानकारी प्राप्त की तथा नन्नारी शरबत और लेमनग्रास तेल के फायदे के बारे में विस्तृत जानकारी।

केंद्रीय बजट 2026-27: दुनिया के बाजारों से मुकाबला करने खेती में नई पहल

● शशिकांत त्रिवेदी,
वरिष्ठ पत्रकार मो. : 9893355391

केंद्रीय बजट 2026-27 ने कृषि क्षेत्र को भारत के विकास और समावेशन एजेंडा के केंद्र में रखा है। सरसरी तौर पर इस बार बजट में खेती को आजीविका, खाद्य सुरक्षा और गाँव-देहात की समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण मानते हुए वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने आने वाले समय में आने वाली कई नई पहल के बारे में बताया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रौद्योगिकी आधारित नवाचार, उच्च-मूल्य वाली फसलों के लिए लक्षित समर्थन और किसानों, महिलाओं तथा संबद्ध क्षेत्रों के सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है।

मछली पालन और जल-आधारित खेती को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने 500 जलाशयों और अमृत सरोवरों के एकीकृत विकास की योजना बनाई है। साथ ही, स्टार्ट-अप और महिला-नेतृत्व वाले समूहों के माध्यम से तटीय मछली पालन मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने का लक्ष्य रखा गया है। मछली किसान उत्पादक संगठनों को प्रोत्साहित कर बेहतर बाजार पहुंच और आय स्थिरता सुनिश्चित की जाएगी।

फसल विविधीकरण पर भी जोर दिया गया है। तटीय क्षेत्रों में नारियल, चंदन, कोको और काजू की खेती को बढ़ावा मिलेगा, जबकि पहाड़ी क्षेत्रों में बादाम, अखरोट और पाइन नट्स पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। नारियल संवर्धन योजना के तहत

पुराने पेड़ों को नई किस्मों से बदलने की पहल होगी। वहीं, काजू और कोको के लिए विशेष कार्यक्रम भारत को 2030 तक आत्मनिर्भर और वैश्विक प्रतिस्पर्धी बनाने का लक्ष्य रखते हैं।

प्रौद्योगिकी एकीकरण के तहत 'भारत-विस्तार' नामक एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संचालित प्लेटफार्म होगा जो एग्रीस्टैक पोर्टल और भारतीय कृषि अनुसंधान को जोड़कर किसानों को खेती बाड़ी के बारे में सलाह देगा। यह पहल उत्पादकता बढ़ाने और खेती में जोखिम कम करने में मदद करेगी।

वित्त मंत्री ने कहा कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने के लिए शी मार्ट्स स्थापित किए जाएंगे। ये समुदाय-स्वामित्व वाले खुदरा केंद्र महिला उद्यमियों को बाजार संपर्क, वित्तीय साधन और सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति प्रदान करेंगे।

अपने बजट भाषण में वित्त मंत्री सीतारमण ने पशुधन क्षेत्र को भी प्राथमिकता दी है। उद्यमिता विकास कार्यक्रम, ऋण-संबद्ध सब्सिडी और पशुधन उद्यमों का आधुनिकीकरण डेयरी और मुर्गी पालन के लिए सरकार एकीकृत मूल्य श्रृंखला बनाएगी। पशु चिकित्सा शिक्षा और बुनियादी ढांचे का विस्तार पशु स्वास्थ्य और उत्पादकता को बेहतर बनाए जाने पर सरकार ज़ोर देगी।

वित्त मंत्री का बजट में खेती पर नजरिया केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि ब्रांडिंग और वैश्विक प्रतिस्पर्धा तक फैला हुआ है। काजू और कोको को प्रीमियम निर्यात के रूप में बढ़ावा देकर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संचालित प्रणालियों को अपनाकर, भारत का लक्ष्य कृषि को मूल्य-वर्धित और विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त क्षेत्र में बदलना है। यह बजट पारंपरिक ताकतों को आधुनिक तकनीक से जोड़ते हुए किसानों और महिलाओं को सशक्त बनाता है तथा विविधीकरण के माध्यम से खेती में लचीलापन लाना है। फौरी तौर पर किसान भाई बजट को भले ही आकर्षक न माने लेकिन आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, आदि भारतीय खेती में बहुत खास होंगे।

कृषक जगत
"Registered" Postal Regn. No.MP/Bhopal/4-150/2026-28 RNI No.-CHHHIN/2002/10910
Post Bag No. 37,BHOPAL-462011
रायपुर, 9 फरवरी 2026, डाक प्रेषण का दिन - मंगलवार, बुधवार

आम बजट : किसानों के हितों की अनदेखी !

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है और करीब 60 प्रतिशत जनसंख्या किसी न किसी रूप से कृषि पर आश्रित है। करोड़ों परिवारों की आजीविका कृषि से सीधे जुड़ी हुई है। पिछले सप्ताह केंद्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण द्वारा संसद में पेश किये गए आम बजट 2026-27 से किसानों को बड़ी उम्मीद थी कि सरकार प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी), सिंचाई, किसान क्रेडिट कार्ड से ऋण सीमा और ब्याज दर में कमी तथा फसल बीमा के बारे में भी कुछ राहत देंगी लेकिन किसानों की अपेक्षाओं और घोषणाओं के बीच एक स्पष्ट अंतर दिखाई दे रहा है। बजट में किसानों के लिए अवसर तो दिखाई दे रहे हैं, पर सुरक्षा-कवच को और मजबूत करने की जरूरत महसूस की जा रही है।

• **मधुकर पवार, मो.: 8770218785**

भारत की कृषि आज भी असुरक्षा के साए में खड़ी है। देश की लगभग 60 प्रतिशत कार्यशील आबादी खेती पर निर्भर है, लेकिन राष्ट्रीय आय में कृषि का योगदान 18-19 प्रतिशत तक सीमित रह गया है। यह असंतुलन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि नीतिगत प्राथमिकताओं की कमियों को उजागर करता है। आम बजट 2026-27 में सरकार ने कृषि को आधुनिक, तकनीक- आधारित और उच्च-मूल्य फसलों से जोड़ने की बात तो की, लेकिन जब सवाल किसानों की सुरक्षा के कवच—आय, मूल्य, सिंचाई और जोखिम का आया तो बजट कई मोर्चों पर अधूरा नजर आया।

प्रत्यक्ष आय सहायता के रूप में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना आज भी छोटे और सीमांत किसानों के लिए नकदी का अहम सहारा है। योजना से 11 करोड़ से अधिक किसान परिवार जुड़े हैं। लेकिन महंगाई और खेती की लागत जिस रफ्तार से बढ़ी है, उसके मुकाबले योजना की राशि में वर्षों वृद्धि नहीं की गई है। बजट में योजना की निरंतरता का आश्वासन है, पर राशि बढ़ाने या कवरेज विस्तार पर कोई ठोस कदम नहीं है। नतीजतन, आय-सुरक्षा का यह कवच समय के साथ कमजोर होते जा रहा है जबकि किसानों की जरूरतों में जबर्दस्त इजाफा हो गया है। इसे देखते हुए वर्तमान में दी जा रही सहायता नाकाफी है। इसे तुरंत दोगुना करने की आवश्यकता है।

खाद, बीज और दवाईयों की बढ़ती कीमतों के साथ मजदूरों की कमी से कृषि की लागत में भी साल-दर-साल वृद्धि हो रही है। अधिकांश किसान फसल बेचकर ही अपने परिवार की जरूरतें पूरी करने के साथ अगली फसल के लिए भी व्यवस्था करते हैं। लेकिन जब उसे फसल की न्यूनतम समर्थन मूल्य से भी कम कीमत मिलती है तो उसके लिए कृषि लाभ का धंधा तो दूर, घाटे का धंधा बन जाती है। सरकार भी जानती है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य किसानों की लागत सुरक्षा का प्रमुख औजार है। सरकार हर साल न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करती है और खरीद की बात भी करती है, लेकिन अधिकांश कृषि उपज का न्यूनतम समर्थन मूल्य बमुश्किल से मिल पाता है। मध्यप्रदेश में सोयाबीन की फसल के दाम न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम मिले तो प्रदेश सरकार ने भावांतर योजना के माध्यम से किसानों को हो रहे नुकसान की भरपाई की और करोड़ों रूपये की राशि का किसानों को भुगतान किया गया। यह भी सच है कि किसान अक्सर खुले बाजार में न्यूनतम समर्थन मूल्य से कम दाम पर फसल बेचने को मजबूर होते हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्य को लंबे समय से कानूनी दर्जा देने की मांग पर बजट में कोई उल्लेख नहीं किया गया। इससे यह संदेश गया कि कृषि उपज की मूल्य-सुरक्षा अभी भी प्रशासनिक विवेक पर निर्भर है, कानून के भरोसे पर नहीं।

फसल खराब होने पर किसान की आखिरी उम्मीद फसल बीमा ही होती है। लेकिन प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को लेकर किसानों की शिकायतें जैसे देर से दावा निपटान, नुकसान आकलन में पारदर्शिता की कमी अब भी बनी हुई हैं। बजट में योजना की निरंतरता तो है, पर भरोसेमंद सुधारों का खाका नहीं है। कर्ज के मोर्चे पर भी तस्वीर चिंताजनक है। संस्थागत ऋण की बात के बावजूद बड़ी संख्या में किसान आज भी महंगे गैर-संस्थागत कर्ज पर निर्भर हैं। कर्ज- पुनर्संरचना, ब्याज राहत या संकटग्रस्त किसानों के लिए विशेष सुरक्षा पैकेज पर बजट में कोई उल्लेख नहीं है। बजट में उर्वरक सब्सिडी, पशुपालन, मत्स्य पालन और तकनीकी पहलों पर खर्च बढ़ता दिखाई दे रहा है, लेकिन प्रत्यक्ष किसान-सुरक्षा से जुड़े उपाय कमजोर हैं। यह विरोधाभास बताता है कि सरकार दीर्घकालिक सुधारों की बात तो कर रही है, पर तत्काल सुरक्षा कवच को मजबूत करने से हिचक रही है जबकि सरकार भी जानती है कि देश के 80 से 85 प्रतिशत लघु और सीमांत किसान हैं जिन्हें आर्थिक सुरक्षा कवच की सख्त जरूरत है। कृषि को आधुनिक बनाना जरूरी है, लेकिन सुरक्षा के बिना सुधार अधूरे हैं। जब तक आय-सुरक्षा को मजबूत नहीं किया जाता, न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनी बाध्यता नहीं मिलती, सिंचाई का दायरा व्यापक नहीं होता और फसल बीमा व कृषि ऋण में राहत नहीं मिलती तब तक किसान आत्मनिर्भर नहीं होगा और वह असुरक्षित ही रहेगा।

बजट की सुर्खियाँ बहुत, किसान की हिस्सेदारी कितनी ?

• **सचिन बोंद्रिया**

इंदौर (कृषक जगत)। केंद्रीय बजट 2026-27 पेश हो चुका है। हर बार की तरह इस बार भी बजट की सुर्खियों में विकास, तकनीक, निवेश और आत्मनिर्भर भारत जैसे बड़े शब्द प्रमुख रहे, लेकिन सवाल वही पुराना है-इस बजट में किसान वास्तव में कहाँ खड़ा है? बजट भाषण में कृषि क्षेत्र का उल्लेख अवश्य किया गया, उच्च-मूल्य वाली फसलों, कृषि विविधीकरण, पशुपालन, मत्स्य पालन और निर्यात बढ़ाने की बात भी कही गई, परंतु सीधे किसान को मिलने वाली राहत और आय सुरक्षा पर ठोस घोषणाएँ अपेक्षा के अनुरूप नहीं दिखीं। सरकार ने यह जरूर कहा कि खेती को लाभ का व्यवसाय बनाया जाएगा, लेकिन उत्पादन लागत, न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी), फसल नुकसान और बाज़ार की अनिश्चितता जैसे ज़मीनी मुद्दों पर किसान आज भी असमंजस में है।

बजट में तकनीक और डिजिटल कृषि की बात तो हुई, पर छोटे और सीमांत किसानों तक इसका लाभ कैसे पहुँचेगा, इस पर स्पष्ट रोडमैप नज़र नहीं आता। खेती के साथ पशुपालन और मत्स्य पालन को आय के अतिरिक्त स्रोत के रूप में प्रस्तुत किया गया, लेकिन इन क्षेत्रों में लगे किसानों के लिए बीमा, ऋण और बाज़ार समर्थन को लेकर बजट मौन दिखाई देता है। वहीं, प्राकृतिक आपदाओं और जलवायु परिवर्तन से जूझ रहे किसानों के लिए भी किसी विशेष पैकेज की घोषणा नहीं की गई।

किसान संगठनों का मानना है कि बजट में कृषि का ज़िक्र होना ही पर्याप्त नहीं है। किसान की आय, सुरक्षा और सम्मान को केंद्र में रखे बिना ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत नहीं किया जा सकता। आज भी देश का किसान यही पूछ रहा है कि जब बजट की सुर्खियाँ इतनी बड़ी हैं, तो उसकी हिस्सेदारी आखिर कितनी है?

कुल मिलाकर, यह बजट नीति और संभावनाओं की बात तो करता है, लेकिन ज़मीनी किसान को तत्काल राहत देने के लिहाज़ से अधूरा माना जा रहा है। आने वाले समय में यह देखना अहम होगा कि बजट की घोषणाएँ खेत तक कब और कैसे पहुँचती हैं।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला -
सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिंचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

जैन टर्बो स्लिम - टीई व सुपर सेव्हर
5 से 20 मील (0.13 से 0.5 मिमी)
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो एक्सेल प्लस
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन टर्बो लाईन सुपर
0.4 मिमी, क्लास 1 एचडी व क्लास 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी साईज

जैन टर्बो लाईन - पीसी
क्लास २
साईज - १६, २० मिमी

जैन टर्बो टॉप - एचडी पीसी
१३, १५ मील (०.33, ०.38 मिमी) - क्लास 1 व 2
साईज - 12, 16, 20 मिमी

जैन पॉलीट्यूब एवं ड्रिपर्स
साईज - 12, 16, 20, 25, 32 मिमी

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटींग में उपलब्ध

जैन ड्रिप®
प्रति बूँद, फसल भरपूर!®
जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.
छोटे छोटे कदम. आसमान छूने का दम!®

दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

ड्रिपलाईन व फिटींग्ज | ड्रिपर्स | रेनपोर्ट स्प्रिंकलर | स्प्रे हेड व जेटस् | वॉल्व | फिल्टर्स | फिल्ट्रेशन संसाधन | फर्टिगेशन संसाधन | पीव्हीसी पाईप व फिटींग्ज | एचडीपीई पाईप्स व फिटींग्ज | क्विक कनेक्ट पाइप | ऑटोमेशन व कन्ट्रोलर्स

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं
नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!